mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-38 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

08 फरवरी 2025 शनिवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

राहुल गांधी, सुप्रिया सुले के आरोपों पर एकनाथ शिंदे ने किया पलटवार

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की वोटर लिस्ट में गड़बड़ी होने का आरोप लगाया है। राहुल गांधी के आरोपों पर अब शिवसेना के मुखिया और

● विधानसभा चुनाव में उन्हें 440 वोल्ट का जोर का झटका लगा

उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बयान दिया है। उन्होंने राहुल गांधी, सुप्रिया सुले और संजय राउत के आरोपों पर पलटवार करते हुए कहा कि विधानसभा चुनाव में उन्हें 440 वोल्ट का जोर का झटका लगा है। ऐसा झटका लगा है कि अभी तक ये लोग उससे उबर नहीं पाए हैं। जनता ने उन्हें

एक मारा पर सॉलिड मारा है। इसलिए जब चुनाव हारते हैं तब ईवीएम, चुनाव आयोग और कोर्ट को कोसते हैं।

उन्होंने कहा, %अब तो वोटर लिस्ट को लेकर आरोप लगा रहे हैं। अरे भाई हमने ढाई वर्ष काम किया, विकास किया। लाडली बहनों, लाडले भाईयों और किसानों ने हमे वोट देकर जिताया है।% ऑपरेशन टाइगर पर एकनाथ शिंदे ने कहा कि अभी तो ट्रेलर दिखाया है, पूरी पिक्चर अभी बाकी है। हम जिस फील्ड पर रहकर काम करते हैं, लोग हमसे जुड़े हैं। हम घर बैठे-बैठे फेसबुक लाइव नहीं करते। मेरे संपर्क में सभी पार्टी के लोग हैं, काम को लेकर सभी मेरे पास आते हैं। बड़े सांसद, विधायक कब उनकी पार्टी में शामिल होंगे, इसे लेकर उन्होंने कहा कि इतनी जल्दी क्या है, सब धीरे-धीरे होगा। अभी तो ट्रेलर दिखाया है, पिक्चर अभी बाकी है।

इससे पहले महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने राहुल गांधी के आरोपों पर जवाब देते हुए कहा था कि राहुल गांधी दिल्ली चुनाव की हार को देखते हुए कवर फायरिंग कर रहे हैं। दिल्ली चुनाव के रिजल्ट के बाद उनकी पार्टी का राष्ट्रीय राजधानी में नामोनिशान समाप्त होने वाला है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि राहुल गांधी दिल्ली के चुनावी नतीजों के बाद 8 फरवरी को क्या बोलेंगे? किस प्रकार से नया नरेटिव तय करना है? इसकी प्रैक्टिस वो अभी से कर रहे हैं। वहीं राहुल गांधी के आज के आरोपों पर देवेंद्र फडणवीस ने कहा, %देखिए वोटर कहां से आए, कहां आए और किसका नाम कटा? इन सभी सवालों के जवाब चुनाव आयोग ने दिया हुआ है। इसलिए इसका अलग से जवाब देने की आवश्यकता नहीं है।%

संक्षिप्त समाचार

ब्राजील में सड़क पर हादसे का शिकार हुआ विमान, 2 लोगों की मौत, कई वाहन क्षतिग्रस्त

साओ पाउलो (एजेंसी)। ब्राजील के साओ पाउलो शहर के पास एक छोटा विमान सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे कई वाहन क्षतिग्रस्त हो गए। राज्य के अग्निशमन दल ने सोशल मीडिया पर इस हदसे के बारे में जानकारी दी है। स्थानीय मीडिया की ओर से साझा की गई तस्वीरों में विमान का जलता हुआ मलबा नजर आ रहा है। वहीं,

स्थानीय मीडिया 'जी1 आउटलेट' ने अपनी खबर में दावा किया कि इस हादसे में कम से कम दो यात्री मारे गए हैं।

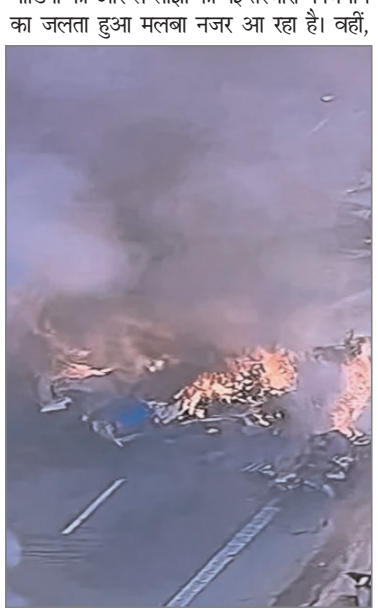

बीते साल दिसंबर के महीने में भी ब्राजील के ग्रामाडो शहर में 10 लोगों को लेकर जा रहा एक छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इस हादसे में भी सभी विमान सवार यात्रियों की मौत हो गई थी। यह हादसा उस वक्त हुआ था जब विमान कथित तौर पर पहले एक इमारत की चिमनी को टकराया, फिर एक घर की दूसरी मंजिल से टकराते हुए एक फर्नीचर की दुकान से टकराया।

पीएम मोदी 12 फरवरी से 2 दिवसीय दौरे पर जाएंगे अमेरिका, राष्ट्रपति ट्रंप से अहम मुद्दों पर होगी चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 12 फरवरी से अमेरिका की 2 दिवसीय यात्रा पर जाएंगे,

जहां वह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ व्यापक वार्ता करेंगे। योजना के अनुसार पीएम मोदी पेरिस की अपनी यात्रा समाप्त करने के बाद वाशिंगटन डीसी जाएंगे। ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के लिए राष्ट्रपति बनने के बाद यह प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका की पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी। ट्रंप प्रशासन के दूसरे कार्यकाल के लिए सत्ता में आने के कुछ ही सप्ताह के भीतर द्विपक्षीय यात्रा पर वाशिंगटन डीसी जाने वाले मोदी कुछ चुनिंदा विदेशी नेताओं में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा पर विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा, ÷अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के निमंत्रण पर प्रधानमंत्री मोदी 12 और 13 फरवरी को अमेरिका की आधिकारिक यात्रा पर जाएंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के उद्घाटन के बाद प्रधानमंत्री मोदी की यह पहली अमेरिका यात्रा होगी। प्रधानमंत्री मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के उद्घाटन के बाद अमेरिका का दौरा करने वाले पहले कुछ विश्व नेताओं में शामिल होंगे और यह तथ्य कि नए प्रशासन के पदभार ग्रहण करने के बमुश्किल तीन सप्ताह के भीतर प्रधानमंत्री को अमेरिका आने का निमंत्रण मिला है, भारत-अमेरिका साझेदारी के महत्व को दर्शाता है और यह अमेरिका में इस साझेदारी को प्राप्त द्विदलीय समर्थन को भी दर्शाता है।÷

'महाराष्ट्र चुनाव की वोटर लिस्ट में हुई धांधली'

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की वोटर लिस्ट में गड़बड़ी किए जाने का आरोप लगाया है। राहुल गांधी के आरोपों पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने जवाब दिया है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि राहुल गांधी दिल्ली चुनाव की हार को देखते हुए कवर फायरिंग कर रहे हैं। दिल्ली चुनाव के रिजल्ट के बाद उनकी पार्टी का राष्ट्रीय राजधानी में नामोनिशान समाप्त होने वाला है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि राहुल गांधी दिल्ली के चुनावी नतीजों के बाद 8 फरवरी को क्या बोलेंगे? किस प्रकार से नया नरेटिव तय करना है? इसकी प्रैक्टिस वो अभी से कर रहे हैं। राहुल गांधी के आज के आरोपों पर देवेंद्र फडणवीस ने नागपुर में कहा, %देखिए वोटर कहां से आए, कहां आए और किसका नाम कटा? इन सभी सवालों के जवाब चुनाव आयोग ने दिया हुआ है। इसलिए इसका अलग से जवाब देने की आवश्यकता नहीं है।%

मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने बार-बार यह कहा है कि जब तक राहुल गांधी चिंतन नहीं करेंगे। केवल अपने मन को झूठी बातें बोलकर अपने आप को बहलने का प्रयास करेंगे। तब तक उनकी पार्टी का पुर्नजीवन नहीं हो सकता है। कांग्रेस के नेताओं का पुर्नजीवन नहीं हो सकता है। इसलिए राहुल गांधी को आत्मचिंतन करना चाहिए।

राहुल गांधी ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि बार-बार मांग के बावजूद निर्वाचन आयोग की ओर से महाराष्ट्र के मतदाताओं के डेटा उपलब्ध नहीं कराने से लगता है कि कुछ न कुछ गलत है।

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने दिया बड़ा बयान

'अभी तो ट्रेलर दिखाया है, पूरी पिक्चर अभी बाकी है'

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने एक बड़ा बयान देकर सूबे का सियासी पारा गरम कर दिया है। उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा, 'अभी तो ट्रेलर दिखाया है, पूरी पिक्चर अभी बाकी है।'

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार को एक बड़ा बयान देकर सूबे की सियासत में हलचल मचा दी है। शिंदे ने %ऑपरेशन टाइगर% को लेकर कहा है कि %अभी तो ट्रेलर दिखाया है, पूरी पिक्चर बाकी है।% उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी, एनसीपी नेता सुप्रिया सुले और शिवसेना (क्ष्ज्ञ) नेता संजय राऊत द्वारा लगाए गए आरोपों पर भी जोरदार पलटवार किया। शिंदे ने कहा कि विधानसभा चुनाव में इन नेताओं को %440 वोल्ट का जोर का झटका% लगा है, जिससे वे अब तक उबर नहीं पाए हैं।

विपक्ष पर बरसते हुए शिंदे ने आरोप लगाया कि चुनाव हारने के बाद ये नेता

श्व्क्क्रू चुनाव आयोग और कोर्ट को दोषी ठहराते हैं, और अब तो वोटर लिस्ट को लेकर भी आरोप लगा रहे हैं। उन्होंने कहा कि समाज के विभिन्न वर्गों के वोट पाकर उन्होंने जीत दर्ज की है। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री ने कहा, %जनता ने उन्हें एक ही मारा पर सॉलिड मारा है। हम 2.5 साल से लगातार काम कर रहे हैं और विकास की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। लाड़ली बहनों, लाड़ले भाइयों और किसानों ने हमें वोट दिया है और जिताया है।%

एकनाथ शिंदे ने %ऑपरेशन टाइगर% पर बोलते हुए कहा, %अभी तो ट्रेलर दिखाया है, पूरी पिक्चर अभी बाकी है। हम फील्ड पर काम कर रहे हैं, तो लोग हमसे जुड़ते हैं। हम घर में बैठकर फेसबुक लाइव नहीं करते। मेरे संपर्क में सभी पार्टियों के लोग हैं। काम को लेकर सभी मेरे पास आते हैं।% इस सवाल पर कि दूसरी पार्टी के सांसद और विधायक कब शामिल होंगे, शिंदे ने कहा, %रुकिये जरा, इतनी जल्दी क्या है? होगा धीरे-धीरे। अभी तो ट्रेलर दिखाया है, अभी पिक्चर बाकी है।% बता दें कि 'ऑपरेशन टाइगर' के तहत शिवसेना (क्ष्ज्ञ) के सांसदों और विधायकों की शिंदे सेना में एंट्री की बात कही जा रही है।

घर में नहीं मिली एंट्री तो ACB ने केजरीवाल को भेजा नोटिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में विधानसभा चुनाव के लिए वोटिंग हो चुकी है। 5 फरवरी को 70 विधानसभा सीटों के लिए एक साथ वोटिंग हुई जिसके परिणाम 8 फरवरी को सामने आएंगे। हालांकि, चुनाव परिणाम से पहले ही आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल एक बार फिर से चर्चा में हैं। दरअसल, अरविंद केजरीवाल समेत आम आदमी पार्टी के कई दिग्गज नेताओं ने आरोप लगाया था कि उनके उम्मीदवारों को 15-15 करोड़ रुपये का ऑफर देकर खरीदने की कोशिश की जा रही है। अब इस मामले में ACB (एंटी करप्शन ब्रांच) की टीम अरविंद केजरीवाल से पूछताछ करने पहुंची लेकिन उसे एंट्री नहीं मिली। ऐसे में ष्क्क ने केजरीवाल को नोटिस भेजा है 5 सवालों के जवाब देने को कहा है। ACB की टीम को केजरीवाल के घर के अंदर नहीं जाने दिया गया। इसके बाद ACB की टीम ने केजरीवाल को नोटिस भेजा है। इस मामले में एसीबी की तीन टीम गठित की गई है। इसमें एक टीम संजय सिंह से पूछताछ कर रही है। ACB ने अरविंद केजरीवाल से आज ही पूछताछ के लिए समय मांगा है। आम आदमी पार्टी की लीगल टीम ने कहा कि ACB की टीम ने नोटिस दिया है।

सड़क किनारे खड़ी छात्राओं को तेज रफ्तार कार ने मारी टक्कर

हवा में उछलकर गिरीं

मुरादाबाद (एजेंसी)। शहर में शुक्रवार को एक दर्दनाक हादसे का मामला सामने आया। यहां रोड किनारे खड़ी छात्राओं को तेज रफ्तार से आ रही एक बलेनो कार ने टक्कर मार दी। कार ने स्कूल की 5 छात्राओं को जबरदस्त टक्कर मारी, जिससे छात्राएं कार के साथ घसीटते हुए बहुत दूर तक चली गई और उछलकर दूर जा गिरीं। सभी छात्राओं को घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इनमें से एक छात्रा की हालत गंभीर बताई जा रही है। वहीं पुलिस ने आरोपी कार चालक को हिरासत में ले लिया है। इस घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है।

दरअसल, मुरादाबाद के थाना सिविल लाइंस की टीडीआई सिटी कॉलोनी में रोड किनारे कुछ छात्राएं खड़ी थीं। उन्हें दूसरे स्कूल में कार्यक्रम में जाना था। इसी बीच एक तेज रफ्तार से आती कार ने सभी को जोरदार टक्कर मार दी। कार सभी छात्राओं को घसीटते हुए दूर तक ले गई। इस हादसे में छात्राएं उछलकर रोड पर गिर गई। वहीं हादसे के बाद पास ही खड़े अन्य छात्र और स्थानीय लोग मदद के लिए आगे आए। उन्होंने आनन-फानन में सभी घायल छात्राओं को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया।

बताया जा रहा है कि सभी छात्राएं 12वीं में पढ़ने वाली शिरडी साई स्कूल की हैं। ये सभी गोल्डन गेट स्कूल में एक कार्यक्रम में आई थीं और वापस जाने के लिए सड़क के किनारे खड़ी थीं। तभी एक बलेनो कार सवार ने उन्हें रौंद दिया। सभी को एशियन विवेकानंद अस्पताल में भर्ती कराया गया। सूचना पर सभी छात्राओं के परिजन व स्कूल प्रशासन के लोग अस्पताल पहुंच गए। वहीं एक घायल छात्रा ने बताया कि पांच-छह छात्राएं खड़ी थीं। तभी एक तेज रफ्तार से आ रही बलेनो कार ने उन्हें टक्कर मार दी, जिससे सभी घायल हो गई।

दिल्ली मतगणना से पहले कह तैयारियां

स्पेशल सीपी देवेश चंद्र श्रीवास्तव ने बताई व्यवस्थायें

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के मद्देनजर मतदान किया जा चुका है और 8 फरवरी को चुनाव के रिजल्ट जारी किए जाएंगे। दिल्ली पुलिस के स्पशेल सीपी एसपीएनओ देवेश चंद्र श्रीवास्तव ने इसे लेकर कहा, ÷हम जिला चुनाव अधिकारियों और रिटर्निंग अधिकारियों के साथ समन्वय में काम कर रहे हैं। मतगणना केंद्रों पर सीएपीएफ की 38 कंपनियां तैनात की गई हैं। लोगों की जांच/तलाशी, मेटल डिटेक्टर और एक्स-रे बैगेज स्कैनर लगाना दिल्ली पुलिस की जिम्मेदारी होगी। हम जनता से शांति बनाए रखने की अपील करते हैं। जो लोग सोशल मीडिया पर गलत सूचना फैलाने की कोशिश करेंगे, उनके खिलाफ कानून के मुताबिक कार्रवाई की जाएगी। सभी वरिष्ठ अधिकारी अलग-अलग इलाकों का दौरा कर रहे हैं। हम सभी राजनीतिक दलों के संपर्क में भी हैं।÷

बता दें कि चुनाव में किसकी जीत होगी अगले 24 घंटे में यह तय हो जाएगा। हालांकि उससे पहले दिल्ली में सियासी पारा गरम हो चुका है। दरअसल अरविंद केजरीवाल, संजय सिंह और आम आदमी पार्टी के कई अन्य नेताओं ने भाजपा पर हॉर्स ट्रेडिंग का आरोप लगाया था। इस मामले में आज एसीबी की टीम अरविंद केजरीवाल के घर पहुंची थी। वहीं इस मामले में आप सांसद संजय सिंह से भी पूछताछ की गई। बता दें कि इस मामले में आम आदमी पार्टी के नेता संजय सिंह ने बयान देते हुए भाजपा पर निशाना साधा।

संजय सिंह ने मीडिया से बात करते हुए कहा, ÷बीजेपी देश की सबसे भ्रष्ट पार्टी है। बीजेपी हमेशा दूसरी पार्टियों को तोड़ने में विश्वास रखती है। बीजेपी ने महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश में सरकारें गिराई। क्या हमें उनसे सर्टिफिकेट चाहिए कि वे बेईमान नहीं हैं। हमने इस बारे में शिकायत की है और जांच की मांग की है। हमारे आरोपों के बाद दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा दिल्ली एलजी के पास गए और उन्होंने एसी को एक पत्र लिखा है। मैं शिकायत दर्ज कराने आया हूं और इसकी जांच चाहता हूं।

जीत अडानी और दिवा शाह की शादी संपन्न

गौतम अडानी ने शेयर की तस्वीरें

अहमदाबाद (एजेंसी)। भारत के दिग्गज उद्योगपति गौतम अडानी के छोटे बेटे जीत अडानी और दिवा शाह की शादी संपन्न हो गई है। दोनों की शादी आज शुक्रवार 7 फरवरी को गुजरात के अहमदाबाद में हुई है। गौतम अडानी ने शादी के बाद अपने बेटे जीत और बहू दिवा के साथ तस्वीरें भी शेयर की हैं। गौतम अडानी ने बताया है कि यह एक छोटा और अत्यंत निजी समारोह था। आइए जानते हैं कि गौतम अडानी ने शादी को लेकर क्या कुछ कहा है।

उद्योगपति गौतम अडानी ने ङ्क पर पत्नी, बेटे और बहू के साथ तस्वीर शेयर करते हुए लिखा- ÷परमपिता परमेश्वर के आशीर्वाद से जीत और दिवा आज विवाह के पवित्र बंधन में बंध गए। यह विवाह आज अहमदाबाद में प्रियजनों के बीच पारंपरिक रीति रिवाजों और शुभ मंगल भाव के साथ संपन्न हुआ। यह एक छोटा

और अत्यंत निजी समारोह था, इसलिए हम चाह कर भी सभी शुभचिंतकों को आमंत्रित नहीं कर सके, जिसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं आप सभी से बेटी दिवा और जीत के लिए स्नेह और आशीष का हृदय से आकांक्षी हूँ।÷

जीत अडानी उद्योगपति गौतम अडानी के छोटे बेटे हैं। वह वर्तमान में अडानी एयरपोर्ट होल्डिंग्स के निदेशक हैं। वह छह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों का प्रबंधन करते हैं और नवी मुंबई में सातवें हवाई अड्डे के निर्माण की देखरेख कर रहे हैं। जीत अडानी ने पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड एप्लाइड साइंसेज से पढ़ाई की है। दिवा शाह देश के जाने-माने हीरा कारोबारी जैमिन शाह की बेटी हैं। जैमिन शाह की कंपनी मुंबई और सूरत में कारोबार करती है। जीत और दिवा की मार्च, 2023 में सगाई हुई थी।

इससे पहले 5 फरवरी को गौतम अडानी ने बताया था- ÷यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मेरा बेटा जीत और बहू दिवा अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत एक पुण्य संकल्प से कर रहे हैं। जीत और दिवा ने प्रति वर्ष 500 दिव्यांग बहनों के विवाह में प्रत्येक बहन के लिए 10 लाख का आर्थिक सहयोग कर 'मंगल सेवा' का संकल्प लिया है। एक पिता के रूप में यह 'मंगल सेवा' मेरे लिए परम संतोष और सौभाग्य का विषय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पावन प्रयास से अनेकों दिव्यांग बेटियों व उनके परिवारों का जीवन सुख, शांति और सम्मान से आगे बढ़ेगा। मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि वह जीत और दिवा को सेवा के इस पथ पर निरंतर आगे बढ़ने का आशीर्वाद और सामर्थ्य दें।÷

भतीजी की शादी में शामिल हुए सीएम योगी आदित्यनाथ

पौड़ी (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को उत्तराखंड के पौड़ी जिले में स्थित अपने पैतृक गांव पंचुर में भतीजी की शादी में शामिल हुए। हालांकि, योगी की मौजूदगी में हुए विवाह समारोह से मीडिया को दूर रखा गया। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और शिक्षा मंत्री धनसिंह रावत भी समारोह में शामिल हुए और वर-वधू को आशीर्वाद दिया। इस दौरान उन्होंने योगी आदित्यनाथ से मुलाकात भी की। समारोह में करीब एक घंटा रुकने के बाद धामी और रावत हवाई मार्ग से वापस देहरादून लौट गए। योगी तीन दिवसीय दौरे पर पंचुर पहुंचे और शनिवार को वह निकटवर्ती ठांगर स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय भी जाएंगे। योगी ने इसी विद्यालय से शिक्षा ग्रहण की थी। मुख्यमंत्री बनने के बाद यह उनका पहला दौरा है हालांकि इससे पहले, जब वह गोरखपुर से सांसद थे, तब भी यहां आए थे। कार्यक्रम की तैयारी में जुटे स्कूल के शिक्षकों ने बताया कि योगी आदित्यनाथ यहां बच्चों से बातचीत करेंगे और इसके बाद वह कांडी स्थित 'राजकीय जूनियर हाईस्कूल' भी जायेंगे और वहां भी बच्चों से बातचीत करेंगे। कांडी गांव योगी आदित्यनाथ के गुरु अवैद्यनाथ का गांव है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर पंचूर, ठांगर सहित आसपास इलाकों में उत्साह का माहौल है। योगी के इस दौरे को उनके बचपन की यादों से जोड़कर देखा जा रहा है।

वंडरलूम्स के को-फाउंडर ने छात्रों को बताए सफलता के मंत्र

भोपाल एजेंसी। भोपाल के युवा उद्यमी और वंडरलूम्स के को-फाउंडर प्रतीक वत्स ने आज रायसेन रोड स्थित एलएनसीटी कॉलेज में स्टार्टअप टॉक के दौरान अपनी सफलता की कहानी साझा की। प्रतीक की कंपनी वंडरलूम्स भोपाल की पहली स्टार्टअप है, जिसने प्रतिष्ठित टीवी शो शार्क टैंक से फंडिंग हासिल की है। 2014 में शुरू की गई वंडरलूम्स बाइकर्स और एडवेंचर प्रेमियों के लिए विशेष मर्चेंडाइज का निर्माण करती है। प्रतीक ने बताया कि कंपनी की शुरुआत उनकी निजी बचत और पिता से लिए गए उधार से हुई। उन्होंने छात्रों को बताया कि एक विचार को सफल व्यवसाय में बदलने की राह आसान नहीं होती, लेकिन दृढ़ संकल्प और सही दिशा में लगातार प्रयास से सफलता जरूर मिलती है। कार्यक्रम में प्रतीक के साथ उनके सह-संस्थापक दीपेश भी मौजूद थे। दोनों ने छात्रों के साथ अपने उद्यमिता के सफर और शार्क टैंक में अपने अनुभवों को साझा किया। इस अवसर पर उन्होंने युवा उद्यमियों को प्रेरित करते हुए कहा कि भोपाल जैसे टियर-2 शहर से भी स्टार्टअप की सफलता की नई कहानियां लिखी जा सकती हैं। प्रतीक ने छात्रों को बताया कि स्टार्टअप के लिए जरूरी नहीं है कि आपको किसी लेक्चर में हिस्सा लेना पड़े, क्योंकि अच्छा आइडिया कहीं भी आ सकता है। उन्होंने कहा, आइडिया इस बुलशिट एंड एग्जीक्यूशन इस एवरीथिंग, यानी अगर आप किसी आइडिया पर काम करते हैं तो उसे केवल सोचने से नहीं, बल्कि उसे लागू भी करना पड़ता है।

प्रतीक ने शार्क टैंक शो में फंडिंग प्राप्त करने के अपने संघर्ष के बारे में भी बात की। उन्होंने बताया कि कई बार उन्हें निराशा का सामना करना पड़ा, लेकिन कभी भी उन्होंने हार नहीं मानी। फंडिंग पाने का सफर आसान नहीं था, लेकिन एक ठोस योजना, कड़ी मेहनत और सही दिशा में काम करने से हम सफल हुए, प्रतीक ने कहा। वह छात्रों को यह भी सलाह देते हुए बोले, अपने आइडिया को समझना और एक मजबूत योजना बनाना बहुत जरूरी है। यदि आपके पास अच्छा उत्पाद है और आप उसे लगातार सुधारते रहते हैं, तो निवेशक आपके हाथ में पैसा रखने के लिए तैयार रहते हैं।

मंत्रालय में 4 दिवसीय स्वास्थ्य जांच शिविर 10 से

भोपाल एजेंसी। मध्य प्रदेश मंत्रालय में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक विशेष स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। वल्लभ भवन-1 के प्रथम तल पर स्थित सरकारी डिस्पेंसरी में 10 से 14 फरवरी तक चलने वाले इस शिविर में नेत्र सेवा सदन चिकित्सालय संत हिरदाराम नगर के विशेषज्ञ डॉक्टर सेवाएं देंगे।

मध्य प्रदेश सचिवालय मंत्रालय शीघ्रलेखक संघ और मध्य प्रदेश अजाक्स मंत्रालय शाखा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में प्रतिदिन सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक जांच की जाएगी। संघ के नेता सुभाष वर्मा और धनश्याम भकोरिया के अनुसार, शिविर में आंखों की जांच के साथ-साथ दंत चिकित्सक भी उपस्थित रहेंगे जो दांतों की जांच करेंगे। इसके अतिरिक्त, कर्मचारियों के रक्तचाप और मधुमेह की भी जांच की जाएगी।

सामान्य प्रशासन विभाग ने मंत्रालय भवन में स्वास्थ्य जांच करने की आवश्यक अनुमति प्रदान कर दी है। यह पहल कर्मचारियों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने और नियमित स्वास्थ्य जांच को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

समाजसेवी नारायणदास की 5वीं पुण्यतिथि

भोपाल एजेंसी। संत हिरदाराम नगर के समाजसेवी स्व. नारायणदास चोटवानी की पांचवीं पुण्यतिथि पूज्य सिंधी पंचायत के तत्वावधान में मनाई गई। नगर निगम भवन के पास स्थित झूलेलाल मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में सर्वप्रथम भगवान झूलेलाल और स्व. नारायणदास चोटवानी के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया गया।

पंचायत अध्यक्ष माधु चांदवानी ने बताया कि स्व. नारायणदास न केवल एक समाजसेवी बल्कि एक महान दानवीर भी थे। वे जरूरतमंद लोगों को कंबल, राशन और दवाइयां वितरित करने के साथ-साथ आर्थिक सहायता भी प्रदान करते थे। विशेष रूप से असहाय महिलाओं के लिए उन्होंने मासिक आर्थिक सहायता की व्यवस्था की थी, जिसके लिए उन्होंने एक विशेष पासबुक सिस्टम भी बनाया था।

कार्यक्रम में पंचायत के कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया, जिनमें महासचिव नंद दादलानी, उपाध्यक्ष जगदीश आसवानी, कोषाध्यक्ष गुलाब जेठानी, सचिव मोहन मीरचंदानी और सहकोषाध्यक्ष माधव पारदासानी प्रमुख थे। इसके अलावा राऊ वाधवानी, घनश्याम लालवानी, ओम आसनानी, अशोक चोटवानी समेत कई समाज के प्रतिष्ठित लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण के साथ हुआ।

यूरो-एशिया कराटे चैंपियनशिप में होली क्रॉस स्कूल का शानदार प्रदर्शन

भोपाल एजेंसी। मुंबई के मुलुंड वेस्ट स्थित प्रियदर्शनी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित 30वीं यूरो-एशिया इंटरनेशनल ह्युस्नस्यह ओपन कराटे चैंपियनशिप में होली क्रॉस को-एड स्कूल, लांबाखेड़ा के छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में स्कूल के छात्रों ने कुल 19 पदक जीतकर विद्यालय का नाम रोशन किया।

उज्जैन सिंहस्थ में भीड़ प्रबंधन के लिए रेलवे के तीन से चार सैटेलाइट स्टेशन बनाए जाएंगे, स्पेशल ट्रेनें भी चलेंगी

भोपाल एजेंसी। प्रयागराज की तरह उज्जैन सिंहस्थ के दौरान भी रेलवे के सैटेलाइट स्टेशन बनाए जाएंगे। तीन से चार स्टेशन बनाने की रूपरेखा बनी है। इससे मुख्य स्टेशन में आने वाली लगभग 75 प्रतिशत भीड़ दूसरे स्टेशनों से आ-जा सकेगी।

इसका लाभ यह होगा कि स्टेशन और शहर में एक साथ भीड़ नहीं पहुंचेगी। प्रयागराज कुंभ में यह प्रयोग सफल रहा है। मप्र पुलिस के अधिकारियों की टीम ने कुंभ में जाकर सैटेलाइट स्टेशन सहित अन्य व्यवस्था देखी थी। अब उसी के अनुरूप उज्जैन सिंहस्थ के लिए तैयारी की जा रही है।

पिछले दिनों अपर मुख्य सचिव राजेश राजौरा ने भी उज्जैन में सिंहस्थ की तैयारियों को लेकर बैठक ली थी। इसमें सैटेलाइट रेलवे स्टेशन और बस स्टाप कहां-कहां बनाए जा सकते हैं, इस पर भी विस्तार से चर्चा हुई थी।

सिंहस्थ के दौरान लगभग तीन करोड़ लोगों के आने की संभावना है। उज्जैन के आसपास पांच से सात किमी के क्षेत्र में सैटेलाइट स्टेशन बनाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त विशेष ट्रेन चलाने की भी तैयारी है।

सिंहस्थ में सुरक्षा के लिए दो पाली में लगभग 42 हजार पुलिसकर्मी लगाए जाएंगे। पुलिस मुख्यालय के अधिकारियों ने बताया कि जिला पुलिस बल के अतिरिक्त होम गार्ड्स के जवान भी लगाए जाएंगे। आवश्यकता होने पर केंद्र से अर्धसैनिक बल की सहायता ली जाएगी। सिंहस्थ के दौरान सुरक्षा के लिए डोर फ्रेम मेटल डिटेक्टर सहित अन्य सामग्री की खरीदी के लिए पुलिस मुख्यालय से प्रस्ताव मांगा गया है। छह माह के भीतर खरीदी की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाएगी।

भोपाल, जबलपुर, इंदौर सहित कई शहरों के लोग परेशान?

भोपाल एजेंसी। अर्बन सीलिंग एक्ट भले ही 24 साल पहले रद्द हो चुका है, लेकिन इसमें भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, इंदौर और उज्जैन समेत प्रदेशभर के करीब 7000 जमीनी मामले अब तक उलझे हुए हैं। कुछ मामले कलेक्टर कार्यालय से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गए हैं लेकिन समाधान नहीं हुआ। भोपाल में बैरागढ़, श्यामला हिल्स, मिसरोद, कोहेफिजा, खानूगांव, भानपुर, बैरसिया आदि इलाकों में ऐसे कई मामले हैं। एक बार सीलिंग शब्द जुड़ने के बाद ऐसी जमीनें न तो बिक सकी न उन पर निर्माण हो पाया। हालांकि कई शहरों में मामला सुलझाने का दावा करके बिल्डरों ने इन जमीनों को कौड़ियों के भाव एग्रीमेंट करके ले लिया। अवैध निर्माण भी कर दिए हैं। वरिष्ठ अधिवक्ता जगदीश छवानी के मुताबिक लाउखेड़ी में स्थित गीता प्रसाद मीणा की जमीन पर सालों पहले प्रशासन ने सीलिंग एक्ट में दावा किया था।

2017 में मामला सुप्रीम कोर्ट तक गया और दावा खारिज हुआ। छवानी ने कहा कि 2000 में निरसन एक्ट लागू होने के पहले कुछ जिलों में वैधानिक प्रक्रिया का पालन किए बगैर दफ्तर में बैठक करके विवादित जमीनों का भौतिक पंचनामा कर दिया गया। यह मामले विवादित हैं। जबलपुर में साल 2011 से लगातार 1246 भूस्वामी प्रशासन से लड़ रहे हैं। सीलिंग पीड़ित किसान समिति के बैनर तले किसान हाई कोर्ट तक जा चुके परंतु विवाद नहीं निपटा। ग्वालियर में हाल में थाटीपुर, गोल पहाड़िया, नारायण विहार आदि में सीलिंग से मुक्त जमीन पर 150 मकान बन चुके हैं। हाल में प्रशासन ने इन्हें नोटिस दिए हैं। इंदौर में 700 एकड़ जमीन पर खजराना, सिरपुर और छोटा बांगड़दा के सैकड़ों मामले सीलिंग के हैं। उज्जैन में घट्टिया में 23 एकड़ जमीन सीलिंग में कब्जेदारों से वापस लेने में प्रशासन को 44 साल लगे। अभी भी सैकड़ों मामले लंबित हैं।

अधिवक्ता राजेश पंचोली के मुताबिक सीलिंग में विवादित जमीन का भौतिक पंचनामा कर ही प्रशासन कब्जा ले सकता है।

शासकीय माध्यमिक विद्यालय में साइबर जागरूकता कार्यक्रम

भोपाल एजेंसी। एम. के. पोंडा कॉलेज ऑफ़ बिजनेस एंड मैनेजमेंट की एनएसएस इकाई और थाना ईटखेड़ी ने शासकीय माध्यमिक विद्यालय में छात्रों को साइबर सुरक्षा की महत्वपूर्ण जानकारी दी। कार्यक्रम में उपनिरीक्षक रिंकू जाटव ने साइबर अपराध के विभिन्न रूपों से बचाव के तरीके बताए और राष्ट्रीय साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 के बारे में जागरूक किया।

एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर प्रो. अनुराग भरत ने सोशल मीडिया अकाउंट्स की सुरक्षा के लिए डबल पासवर्ड और यूपीआई सुरक्षा पर विशेष जोर दिया। विद्यालय के प्राचार्य नरेंद्र सिंह परमार ने छात्रों को व्यक्तिगत डेटा की गोपनीयता बनाए रखने की सलाह दी।

कार्यक्रम में महाविद्यालय की एक्टिविटी कोऑर्डिनेटर प्रो. चेतना राय भी मौजूद रहीं। इस दौरान साइबर क्राइम पर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह से हिस्सा लिया।

सीएम ने किया स्वयं सेवकों का सम्मान

भोपाल एजेंसी। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने 6 फरवरी 2025 को मुख्यमंत्री निवास में गणतंत्र दिवस परेड कैंप 2025 में भाग लेने वाले राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों का विशेष सम्मान किया। इस अवसर पर ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, भोपाल के एनएसएस स्वयंसेवकों की उपस्थिति विशेष रही।

मुख्यमंत्री यादव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए एनएसएस की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना देश की युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करने का एक सशक्त माध्यम है। उन्होंने स्वयंसेवकों को समाज के सच्चे नायक बताते हुए कहा कि ये युवा देश की प्रगति और सेवा के प्रति पूर्णत: समर्पित हैं।

सम्मान समारोह में स्वयंसेवकों ने गर्व के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और राष्ट्र निर्माण में अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। यह कार्यक्रम युवाओं में राष्ट्रीय सेवा के प्रति समर्पण और देशभक्ति की भावना को और मजबूत करने में सफल रहा।

मध्यप्रदेश अन्तर्राष्ट्रीय सूरजकुंड शिल्प मेले में बना थीम स्टेट

भोपाल एजेंसी। मध्यप्रदेश, हरियाणा के पर्यटन विभाग द्वारा 7 फरवरी से 23 फरवरी, 2025 तक आयोजित किए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय सूरजकुंड शिल्प मेला में थीम राज्य है। इस अवसर पर मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति एवं पर्यटन विभाग के संयोजन से मेले में आने वाले देश-विदेश के सैलानियों को मध्यप्रदेश की संस्कृति, पर्यटन, कला, शिल्प देखने और पारंपरिक व्यंजनों का आनंद लेने का अवसर मिलेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय सूरजकुंड शिल्प मेले में मध्यप्रदेश की ओर से सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के अंतर्गत लोक नृत्य-संगीत का प्रदर्शन होगा। इसमें भगोरिया, गणगौर, मटकी, गुदुमबाजा, काठी, करमा, भड़म, बरेदी, बधाई-नौरता, अहिराई इत्यादि लोक नृत्यों की प्रस्तुति होगी। मध्यप्रदेश की समृद्ध लोक संस्कृति को मेले के सैलानी देख सकेंगे। मेले में 17 फरवरी को नाटक बैजू बावरा और नृत्य नाटिका वीरांगना रानी दुर्गावती की विशेष प्रस्तुतियां भी होंगी।

सूरजकुंड शिल्प मेला में मध्यप्रदेश के 40 शिल्पकारों के पारंपरिक शिल्प प्रदर्शन सह विक्रय के लिए उपलब्ध होंगे। इन शिल्पों में चंदेरी, महेश्वरी साड़ी एवं बाग प्रिंट, दरी-चादर, अजरक प्रिंट, घास की पत्ती से बने शिल्प, गोंड पेंटिंग, ढोकरा शिल्प, जूट, मिट्टी शिल्प, कढ़ाई एवं छपाई, भीली गुड़िया, छापा कला, नाँदना प्रिंट, लौह शिल्प, गोबर शिल्प, कशीदाकारी, खरद शिल्प, खादी और कॉटन, ब्लॉक प्रिंट इत्यादि शामिल हैं।

मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा मेला परिसर में विशेष मंडप भी बनाया गया है, जहां प्रदेश के पर्यटन के बारे में विस्तृत जानकारी पर्यटकों को दी जा सकेगी। पर्यटक जान सकेंगे कि वे कैसे मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों का भ्रमण कर सकते हैं।

लोक निर्माण मंत्री के निर्देश पर निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की हुई जांच

भोपाल एजेंसी। लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह के निर्देश पर प्रदेश में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिये औचक निरीक्षण की नवीन पहल प्रारंभ की गई हैं। इसके तहत हर माह की 5 और 20 तारीख को सॉफ्टवेयर के माध्यम से रैंडम तरीके से चयनित दलों, जिलों, निर्माण कार्यों और सामग्री के सैंपल लेने के स्थानों का औचक निरीक्षण किया जाएगा। इसी क्रम में हाल ही में लोक निर्माण विभाग के सातों परिक्षेत्रों के एक-एक जिले में मुख्य अभियंताओं की टीमों द्वारा निरीक्षण किया गया। प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, भरत यादव की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक की गई। बैठक में निरीक्षण किए गए सात जिलों के 35 निर्माण कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसे सॉफ्टवेयर पर अपलोड कर पोर्टल पर प्रदर्शित किया गया। बैठक में प्रबंध संचालक भवन विकास निगम पंकज जैन, प्रमुख अभियंता लोक निर्माण विभाग केपीएस राणा, प्रमुख अभियंता एस.आर. बघेल सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी एवं समस्त मुख्य अभियंता उपस्थित रहे।

प्रबंध संचालक श्री यादव ने सड़क, भवन और पुल निर्माण कार्यों के निरीक्षण के लिए अलग-अलग चेकलिस्ट तैयार करने के निर्देश दिए। निरीक्षण रिपोर्ट के लिए एक मानक फॉर्मेट तय करने का सुझाव दिया, जिससे निर्माण कार्यों की कमियों और सकारात्मक बिंदुओं को स्पष्ट रूप से दर्शाया जा सके। उन्होंने निर्देश दिये कि निरीक्षण के दौरान लिए गए नमूनों की लैब रिपोर्ट आने के बाद सभी दलों को फाइनल निरीक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

समीक्षा बैठक में सिंगपुर-धरमपुर रोड से मझपुरा रोड के निर्माण कार्य में गुणवत्ता में गंभीर कमी पाए जाने पर सख्त कार्रवाई करते हुए उपयंत्री को निलंबित करने एवं कार्यपालन यंत्री को कारण बताओ सूचना पत्र जारी करने का निर्णय लिया गया। ठेकेदार मेसर्स माँ शारदा कंस्ट्रक्शन एण्ड सप्लायर पन्ना को ब्लैक लिस्ट करने के निर्देश दिये गये।

प्रबंध संचालक श्री यादव ने पन्ना जिले में वन स्टॉप सेंटर भवन कार्य में पाई गई कमी के आधार पर उपयंत्री को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया। भोपाल जिले में भोपाल-देवास मार्ग में कि.मी. 20, 23,24 एवं 25 में कुछ स्थानो पर सरफेस में क्रेक एवं रफनेस पाई गई। मार्ग में डिवाईडर में पेंटिंग एवं साईन बोर्ड तथा शोल्डर मापदण्ड अनुसार नही पाये गये। इसके लिये ठेकेदार एवं संबंधित अधिकारियों को 7 दिवस में सुधार कार्य करने के लिये निर्देशित किया गया। ग्वालियर जिले में सड़क कार्य पटेल का पुरा से गुरी बंजारों का पूरा मार्ग में निरीक्षण में ठेकेदार के द्वारा सी.आर.एम. एवं डब्ल्यू.एम. का कार्य मानक स्तर का नहीं किये जाने के एवं कार्य में विलंब के कारण ठेकेदार मेसर्स कामतानाथ कंस्ट्रक्शन कंपनी मुरैना को ब्लैक लिस्ट करने के निर्देश दिये गये।

प्रबंध संचालक यादव ने कहा कि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए और किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आयोजित 'एकात्म धाम' मंडपम् में शंकर गाथा की प्रस्तुति से दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

भोपाल एजेंसी। सनातन संस्कृति की दिव्य अनुभूति के महापर्व प्रयागराज महाकुम्भ में आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा अद्वैत वेदान्त दर्शन के लोकव्यापीकरण एवं सार्वभौमिक एकात्मता की संकल्पना के उद्देश्य से एकात्म धाम शिविर सेक्टर-18, हरिश्चन्द्र मार्ग, महाकुम्भ क्षेत्र, झूंसी, प्रयागराज में गुरुवार को हजारों दर्शकों की उपस्थिति में आदि शंकराचार्य के जीवन पर केंद्रित दो दिवसीय नृत्य नाटिका के प्रथम दिन 'शंकर गाथा' की प्रस्तुति हुई तो पूरा सभागार मंत्रमुग्ध हो उठा, गाथा के सूत्रधार की भूमिका महाभारत के श्रीकृष्ण के रूप में लोकप्रिय अभिनेता नितेश भारद्वाज ने निभाई। वहीं इसका निर्देशन विश्व प्रसिद्ध कोरियोग्राफर मैत्रेयी पहाड़ी ने किया।

दैनिक दिनचर्या में साधना से 'दिव्य रूपांतरण' विषय पर जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि महाराज की गरिमामय उपस्थिति में आयोजित सत्र में चिन्मय मिशन चेन्नई के स्वामी मित्रानन्द सरस्वती, नेशनल कैपिसिटी बिल्डिंग कमीशन से श्री आर.बाला सुब्रमण्यम ,03 बार के ग्रेमी अवार्ड विजेता पद्मश्री रिकी केज ऐश्वर्या हेगड़े (नेशनल एजुकेशन फाउंडेशन की न्यासी सचिव) एवं प्राच्यम के सह-संस्थापक प्रवीण चतुर्वेदी ने अपने विचार व्यक्त किये। स्वामी अवधेशानंद गिरि ने कहा, शंकर भगवत्पाद का अद्वैत सिद्धांत समाधान मूलक है।

विश्व में जो अशांति व्याप्त है, उसका समाधान यदि कहीं से निकलेगा तो वह अद्वैत वेदांत से होगा। आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास के प्रयास प्रशंसनीय हैं। आने वाला युग और शताब्दियाँ आदि शंकराचार्य के विचारों का अनुसरण करेंगी।

स्वामी मित्रानंद सरस्वती ने कहा, हमारे हर छोटे से छोटे कार्य को प्रार्थना में बदला जा सकता है। जब हम अपने कार्यों को भगवान को समर्पित करके करते हैं, तो वह कर्म योग बन जाता है। ऐसा कार्य कर्मों से प्रभावित नहीं होता।

संगीतकार पद्मश्री रिकी केज ने कहा, संगीत और प्रकृति एक ही हैं।

अपने कार्य के प्रति अद्वितीय जुनून होना चाहिए।

स्मैक तस्करी का आरोपी पकड़ाया

पुलिस ने 40 हजार की स्मैक बरामद, जेल भेजा

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सूरज द्विवेदी (25) के रूप में हुई है। आरोपी के पास से 4 ग्राम स्मैक बरामद की है, जिसकी बाजार में कीमत लगभग 40 हजार आंकी गई है।

जयंत चौकी प्रभारी सुधाकर सिंह परिहार के अनुसार, सुबह सूचना मिली थी, कि जयंत क्षेत्र में एक व्यक्ति स्मैक बेचने के लिए घूम रहा है। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए घेराबंदी कर आरोपी सूरज द्विवेदी को पकड़ लिया। जो जाखरावल थाना जियावान, सिंगरौली का रहने वाला है।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मादक पदार्थ अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया है। आरोपी को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। इस सफल कार्रवाई में चौकी प्रभारी सुधाकर सिंह परिहार के नेतृत्व में सहायक उप निरीक्षक राजेश द्विवेदी, श्याम बिहारी द्विवेदी, प्रधान आरक्षक वीरेंद्र पटेल, सुनील मिश्रा, सिरदे लाल उइके, आरक्षक महेश पटेल और प्रकाश सिंह की टीम शामिल थी।

बिजली कनेक्शन के लिए विवाद

दो लोगों ने लाठी-डंड़ों से युवक को पीटा, अस्पताल में भर्ती

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। बहरी थानाक्षेत्र अंतर्गत नगझर गांव में शुक्रवार सुबह 11 बजे बिजली कनेक्शन ठीक करने के दौरान हुए विवाद में दो लोगों ने लाठी-डंडों से एक युवक पर हमला कर दिया। घटना में श्यामलाल केवट के सीने, हाथ और पैर में चोटें आई हैं। घायल श्यामलाल की पत्नी मुन्नी ने जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। जहां उनका गंभीर हालत में इलाज हो रहा है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

दरअसल, श्यामलाल केवट जब अपने घर का खराब बिजली कनेक्शन ठीक कर रहे थे, इसी दौरान उनके ही परिवार के बुद्धसेन केवट और गोलू केवट ने उन्हें रोक दिया। दरअसल, बिजली का तार इन दोनों के घर के ऊपर से गुजर रहा था। जिसे लेकर विवाद हुआ था।

इधर, थाना प्रभारी बहरी राकेश बैस ने बताया कि श्यामलाल की शिकायत पर दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है, आगे की कार्रवाई की जा रही है।

स्टेशन पर टीटीई ने नहीं खोला कोच का गेट

लोगों ने मारे लात-घूंसे, पुलिस ने यात्रियों को बैठाया, कुछ की ट्रेन छूटी

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर रेलवे स्टेशन पर गुरुवार रात एक बार फिर यात्रियों और रेलवे कर्मचारियों के बीच विवाद की स्थिति बन गई। अंबेडकर नगर से प्रयागराज जाने वाली ट्रेन में रात 11:30 बजे के करीब यात्रियों के साथ टीटीई का विवाद हो गया। टीटीई द्वारा ट्रेन का गेट नहीं खोले जाने से नाराज यात्रियों ने गेट पर लात-घूंसे बरसाए।

आरोप है कि टीटीई ने यात्रियों के साथ अभद्र व्यवहार किया गया और अंदर से गेट बंद कर चुप्पी साध ली। शिकायत पर सिविल लाइन थाना पुलिस पहुंची और ट्रेन के गेट खुलवाकर लोगों को बैठाया और गाड़ी को रवाना किया। हालांकि, देरी के कारण कई यात्री जिनके पास रिजर्वेशन था, वे भी ट्रेन में नहीं चढ़ पाए।

महिला यात्री के साथ मारपीट: इस दौरान ट्रेन के अंदर महिला यात्री के साथ मारपीट की गई। जब इस घटना की जानकारी पीड़िता की मां को लगी, तो वह बेहोश हो गईं। मौके पर मौजूद लोगों ने उन्हें पानी पिलाकर होश में लाया। इससे पहले स्टेशन पर पत्थरबाजी की घटना के वीडियो वायरल हुए थे।

जबरन स्लीपर कोच में घुस रहे थे: रेलवे झांसी मंडल पीआरओ मनोज सिंह ने बताया कि घटना की जानकारी मिली है, कुछ लोग जबरन स्लीपर कोच में घुसना चाहते थे। सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाई जाएगी।

वहीं सिविल लाइन थाना प्रभारी वाल्मीकि चौबे ने बताया कि घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस बल मौके पर पहुंचा था किसी को कोई चोट नहीं आई है और न ही किसी की गिरफ्तारी की गई है। रेलवे विभाग के द्वारा जो जानकारी दी जाएगी उसी के अनुसार कार्रवाई होगी।

कार की टक्कर से बाइक सवार भाई की मौत

शादी से लौट रहे थे, 200 मीटर तक घसीटा, कार चालक फरार

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में शुक्रवार सुबह सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई, जबकि उसका भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसा छतरपुर-नौगांव रोड पर देवपुर तिगैला के पास सुबह 7 बजे हुआ। राजेंद्र कुशवाहा (27) और उसका चचेरा भाई दीपक कुशवाहा (22) धमोरा गांव में अपने फूफा के बेटे की शादी में शामिल होकर अपने गांव रामपुर टीला लौट रहे थे। इसी दौरान एक बिना नंबर की नई कार ने उनकी बाइक को पीछे से टक्कर मार दी। कार इतनी तेज रफ्तार में थी कि उसने बाइक को लगभग 200 मीटर तक घसीटा और फिर एक पेड़ से टकरा गई।

राजेंद्र की मौके पर ही मौत: भीषण टक्कर में राजेंद्र की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दीपक गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे में कार और बाइक दोनों बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गईं। कार चालक मौके से फरार हो गया। राहगीरों की मदद से घायलों को एंबुलेंस से जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने राजेंद्र को मृत घोषित कर दिया और गंभीर हालत में दीपक को ग्वालियर रेफर कर दिया।

कार चालक मौके से फरार हुआ: थाना प्रभारी दीपक यादव के अनुसार, पुलिस ने कार को जब्त कर लिया है और फरार चालक की तलाश की जा रही है। मृतक का पोस्टमॉर्टम कराया जा रहा है। मृतक के चाचा हीरालाल कुशवाहा ने बताया कि दोनों भतीजे शादी समारोह से घर लौट रहे थे जब यह दुर्घटना हुई।

25 स्थानीय युवाओं को मिला टूरिस्ट गाइड का लाइसेंस

अमरकंटक समेत कई पर्यटन स्थलों पर करेंगे काम

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले में पर्यटन को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। मध्यप्रदेश पर्यटन बोर्ड ने 25 स्थानीय युवाओं को टूरिस्ट गाइड का आधिकारिक लाइसेंस दिया है। इन गाइडों को राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक के पर्यटन विभाग के विशेषज्ञों द्वारा विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। प्रशिक्षण में क्षेत्र के ऐतिहासिक, धार्मिक और भौगोलिक महत्व की जानकारी दी गई है, जिससे वे पर्यटकों को सटीक मार्गदर्शन प्रदान कर सकें।

अनूपपुर जिला प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध है। यहां का प्रमुख आकर्षण अमरकंटक है, जो नर्मदा नदी का उद्गम स्थल है। इसके अलावा कपिलधारा और दुग्धधारा जैसे पर्यटन स्थल भी यहां मौजूद हैं। इन प्रशिक्षित गाइडों की नियुक्ति से पर्यटकों को इन स्थलों की विस्तृत और प्रामाणिक जानकारी मिल सकेगी। यह पहल न केवल स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करेगी, बल्कि जिले के पर्यटन को भी नई पहचान दिलाएगी। मध्यप्रदेश पर्यटन बोर्ड और जिला प्रशासन द्वारा प्रमाणित होने से इन गाइडों की विश्वसनीयता भी बढ़ेगी। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और अनूपपुर को पर्यटन के मानचित्र पर एक विशेष स्थान प्राप्त होगा।

शहडोल के सिंहपुर में 24 घंटे में दो बड़ी चोरियां

किराना दुकान से 25 हजार नकद और लाखों का सामान चोरी

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। सिंहपुर क्षेत्र में 24 घंटे में दो बड़ी चोरियों ने लोगों की नींद उड़ा दी है। ताजा मामले में सिगुड़ी गांव में चोरों ने एक किराना दुकान की पिछली दीवार में सेंध लगाकर 25 हजार नकद के साथ लाखों का किराना सामान चोरी कर लिया।

दुकान के मालिक राजकुमार सिंह को सुबह दुकान खोलने पर चोरी का पता चला। दुकान का सामान बिखरा हुआ था और पिछली दीवार में बड़ा छेद बना हुआ मिला। सूचना मिलते ही सिंहपुर थाने की पुलिस मौके पर पहुंच गई।

इससे एक दिन पहले बुढ़ार थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 7 में कलारी के एक रिटायर्ड कर्मचारी के घर से भी लाखों की चोरी हुई थी। सहायक उप निरीक्षक राजेंद्र तिवारी के अनुसार, दोनों मामलों में चोरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। पुलिस ने डॉग स्क्वॉड और स्पेशल टीम की मदद से जांच तेज कर दी है।

अनूपपुर में तबाही मचाने वाले दो हाथी छत्तीसगढ़ लौटे

46 दिन बाद अनूपपुर, जैतहरी और राजेंद्र ग्राम के लोगों ने ली राहत की सांस

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के दो नर हाथियों की वापसी से अनूपपुर जिले के ग्रामीणों ने राहत की सांस ली है। पिछले 46 दिनों से इन हाथियों ने क्षेत्र में दहशत का माहौल बनाया हुआ था। शुक्रवार सुबह दोनों हाथी अपने गृह क्षेत्र मरवाही लौट गए।

इन हाथियों ने अनूपपुर, जैतहरी और राजेंद्रग्राम क्षेत्र में भारी नुकसान पहुंचाया। अपनी आखिरी रात में भी उन्होंने जैतहरी के धनगवां बीट में विश्राम करने के बाद कुकूरगोडा और चोलना पंचायत में उत्पात मचाया। हाथियों ने ग्रामीणों के घरों में तोड़फोड़ की, खड़ी फसलों को नष्ट किया और चोलना के सरपंच की बाड़ी में लगे ट्यूबवेल के पाइप को क्षतिग्रस्त कर दिया।

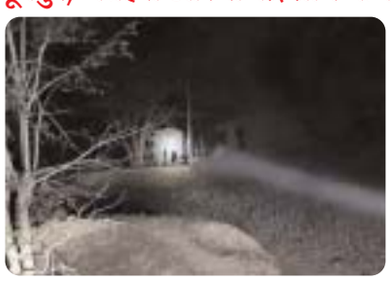

शुक्रवार की सुबह दोनों हाथी गूजर नाला पार कर छत्तीसगढ़ के मरवाही वन क्षेत्र में स्थित मालाडांड डिडवा के जंगल में चले गए। डेढ़ महीने से इन हाथियों की गतिविधियों के कारण स्थानीय लोगों की नींद उड़ी हुई थी और उन्हें अपनी सुरक्षा की चिंता सता रही थी। हाथियों की वापसी से अब क्षेत्र में जनजीवन सामान्य हो गया है।

पुल के नीचे झोले में फेंक गए नवजात बच्ची

पुलिस ने कहा- एक से दो दिन पुराना लग रहा शव

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर-अमरकंटक मेन रोड पर सकरा ग्राम पंचायत के छीरा पटपर में एक पुल के नीचे एक नवजात बच्ची का शव बरामद किया गया है। पुलिस के अनुसार, मृत बच्ची की उम्र महज एक से दो दिन की थी।

शुक्रवार की शाम को कोतवाली पुलिस को सूचना मिली कि छीरापटपर गांव के पास इमली पेड़ पुल के नीचे एक झोले में नवजात का शव पड़ा है। सूचना मिलते ही कोतवाली निरीक्षक अरविंद जैन के निर्देश पर सहायक उप निरीक्षक संतोष पांडेय पुलिस दल के साथ मौके पर पहुंचे।

मौके पर जांच के दौरान पुलिस को एक झोले में नवजात बच्ची का शव मिला। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जिला अस्पताल में सुरक्षित रखवा दिया है। मामले में केस दर्ज कर लिया गया है और पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी है।

बोर्ड परीक्षा की तैयारियों के संबंध मे बैठक आयोजित

बोर्ड के निर्देशों का पालन करते हुए शांतिपूर्ण परीक्षा सम्पन्न कराएं : कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कक्षा 10वीं तथा 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं 25 फरवरी 2025 से प्रारंभ होगी। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी की अध्यक्षता में बोर्ड परीक्षा की तैयारियों के संबंध में बैठक आयोजित की गई। कलेक्टर ने बोर्ड परीक्षाओं के लिए नियुक्त कलेक्टर प्रतिनिधियों को निर्देशित किया कि माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल द्वारा जारी निर्देशों का कड़ाई से पालन करते हुए शांतिपूर्ण ढ़ंग से बोर्ड की परीक्षाएं सम्पन्न कराये।

कलेक्टर ने कहा कि बोर्ड परीक्षाओं के लिए माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए गए है। उन निर्देशों के अनुसार ही परीक्षाएं संचालित की जाए। किसी भी स्थिति में पेपर लीक, समुहिक नकल जैसी घटनाएं जिले में नही हों। परीक्षा केन्द्रों में मोबाइल का उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा।

केवल विहित प्राधिकारी रिपोर्टिंग के लिए मोबाइल का उपयोग कर सकेंगे। कलेक्टर ने कहा कि वर्चुअल माध्यमों से, तकनीकी के उपयोग से पेपर लीक की घटनाएं होती है। वर्चुअल माध्यमों पर भी कड़ी निगरानी रखनी होगी। कलेक्टर ने कहा कि सभी कलेक्टर प्रतिनिधि परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण कर लें तथा सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक व्यवस्थाओं का अवलोकन कर लें। कलेक्टर ने कंट्रोल रूम की व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के निर्देश दिए हैं।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज ने सभी अधिकारियों को माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार तथा विहित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए बोर्ड की परीक्षा संपादित करने के निर्देश दिए हैं। सभी परीक्षा केन्द्रों में उड़न दस्ता दलों द्वारा निगरानी रखने के निर्देश दिए हैं। संवेदनशील तथा अतिसंवेदनशील परीक्षा केन्द्रों में विशेष निगरानी रखने के निर्देश दिए गए हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी डॉ पीएल मिश्रा ने बताया कि जिले के 66 परीक्षा केन्द्रों में 25 फरवरी 2025 से कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं आयोजित की जावेगी। 7 परीक्षा केन्द्रों को अतिसंवेदनशील तथा 13 को संवेदनशील के रूप् में चिन्हांकित किया गया है। माध्यमिक शिक्षा मंडल के निर्देशों के अनुसार सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही है। एपीसी रमसा डॉ सुजीत कुमार मिश्रा द्वारा प्रेजेन्टेशन के माध्यम से आवश्यक दिशा निर्देशों से अवगत कराया गया।

बैठक में उपखण्ड अधिकारी कुसमी प्रिया पाठक, प्रभारी सहायक आयुक्त एसएन द्विवेदी सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहें।

कर्मचारियों का एक दिवसीय धरना

नियमितीकरण और समान वेतन समेत 51 मांगों को लेकर प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में शुक्रवार को अधिकारी-कर्मचारी संयुक्त मोर्चा ने एक दिवसीय प्रदर्शन किया। दोपहर 2 बजे विथिका भवन में शुरू हुए इस प्रदर्शन में कर्मचारियों ने अपनी 51 सूत्रीय मांगों को लेकर आवाज बुलंद की।

मध्य प्रदेश कार्यकारी संघ के अध्यक्ष श्याम सुंदर शर्मा ने बताया कि कर्मचारियों की प्रमुख मांगों में नियमितीकरण, क्रमिक पदोन्नति और अनुकंपा नियुक्ति शामिल हैं। उन्होंने कहा कि कार्य के दौरान किसी कर्मचारी की मृत्यु या दुर्घटना होने पर भी अनुकंपा नियुक्ति पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसके अलावा वेतन विसंगति की समस्या भी गंभीर है, जिससे कर्मचारियों को उनके काम के अनुरूप वेतन नहीं मिल पा रहा है।

कर्मचारियों ने अपनी मांगों को लेकर अपर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। अपर कलेक्टर अंशुमन राज ने आश्वासन दिया कि कर्मचारियों की मांगों को सरकार के उच्च अधिकारियों तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने कहा कि ज्ञापन के माध्यम से सभी मांगों से शासन को अवगत कराया जाएगा।

कर्मचारी नेताओं का कहना है कि इससे पहले भी कई बार धरना प्रदर्शन के माध्यम से अपनी मांगें रखी गईं, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। इस बार के प्रदर्शन में मोर्चा के सभी कर्मचारी और अधिकारी शामिल हुए।

उपार्जन केन्द्र प्रभारी एवं कम्प्यूटर आपरेटरों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने उपार्जन नीति वर्ष 2024-25 के प्रावधानों का उल्लंघन करने पर केन्द्र प्रभारी धान उपार्जन केन्द्र गुजरेड़, अमरपुर, खड्डी गुजरेड़ क्रमांक 2, पटेहरा, टिकटकला केन्द्र क्रमांक 01 बघउ के साथ उनके अधीनस्थ कम्प्यूटर आपरेटरो को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया है। इसके साथ ही शाखा प्रबंधक डब्ल्यूएलसी रामपुर नैकिन, प्रदाय केन्द्र प्रभारी एमपीएससीएससी रामपुर नैकिन एवं गोदाम मालिक कमल फूह प्रोडक्ट कोष्टा चुरहट को भी कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया है। तीन दिवस के अन्दर संतोषजनक जबाव प्रस्तुत नहीं करने पर संबंधितों के विरूद्ध अनुशासनात्मक एवं वैधानिक कार्यवाही की जावेगी।

9 फरवरी को पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह सितलहा में गांधी प्रतिमा में माल्यार्पण कर जनसभा को संबोधित करेंगे : चक्रधर सिंह

मीडिया ऑडीटर, जवा (निप्र)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, राज्यसभा सांसद, कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय नेता दिग्विजय सिंह जी 9 फरवरी दिन रविवार को 1:00 दिन, नगमा प्रतिमा अनावरण स्थल के बाद,सिरमौर विधानसभा के ग्राम पंचायत सितलहा (मां शीतला धाम) में गांधी प्रतिमा में माल्यार्पण कर मैदान परिसर में जन सामान्य को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमेटी रीवा के अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा जी करेंगे। कार्यक्रम में कई वरिष्ठ नेता गण भी रहेंगे।कार्यक्रम के आयोजक अमित चक्रधर सिंह सरपंच ग्राम पंचायत सितलहा एवं अध्यक्ष सरपंच संघ जवा ने सभी पंचायत के प्रतिनिधि गण, देवतुल्य जनता जनार्दन, एवं कांग्रेस पार्टी के सभी पदाधिकारी गणों से 1:00 दिन ग्राम पंचायत सितलहा मैदान में पहुंचने की विनम्र अपील की है।

फाइनेंस कंपनी के कर्मचारियों ने डेढ़ लाख का गबन

स्वसहायता समूह की महिलाओं की किस्त नहीं जमा की, शाखा प्रबंधक समेत 3 के खिलाफ केस

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले के बुढ़ार थाना क्षेत्र में एक फाइनेंस कंपनी के कर्मचारियों ने स्वसहायता समूह की महिलाओं के साथ बड़ी धोखाधड़ी की। पुलिस ने कंपनी के शाखा प्रबंधक प्रमोद पांडे, रिलेशनशिप अधिकारी दीपक सेन और लखन लाल साहू के खिलाफ गबन का मामला दर्ज किया है।

कंपनी से मिला किस्त जमा न करने का नोटिस: मामले का खुलासा तब हुआ जब स्वसहायता समूह की महिलाओं को कंपनी से किस्त जमा न होने की नोटिस मिली। संगीता पटवा सहित कई महिलाओं ने रोजगार के लिए कंपनी से लोन लिया था और नियमित रूप से किस्तें जमा कर रही थीं।

महिलाओं ने अलग-अलग किश्तों में लगभग डेढ़ लाख रुपए कर्मचारियों को दिए, लेकिन कर्मचारियों ने यह राशि कंपनी में जमा नहीं की और खुद अपने पास रख ली।

थाना प्रभारी संजय जयसवाल ने बताया कि शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने गहन जांच की। जांच में पाया गया कि कर्मचारियों ने महिलाओं से मिली किस्तों की राशि का गबन किया है। पुलिस ने तीनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है और उनकी गिरफ्तारी के लिए टीमें लगा दी गई हैं।

संपादकीय

सरकार की इच्छा शक्ति का ही परिणाम है राजस्थान की माइनिंग सेक्टर में लंबी छलांग

माइनिंग सेक्टर के महत्व को रुस यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में अमेरिका की हालिया नीति के चलते आसानी से समझा जा सकता है। अमेरिका की यूक्रेन की खनिज संपदा पर नजर है और वह चाहता है कि यूक्रेन को सहयोग करने के बदले में यूक्रेन की खनिज संपदा के दोहन का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से अधिकार अमेरिका को मिल जाए। यही हालात दुनिया के दूसरे देशों की है। आज चीन की मोनोपोली से सभी देश गले तक भर आये हैं वहीं दुनिया के देश खनिज संपदा के भण्डारों की खोज व खनन के विकल्प ढूंढने लगे हैं। यही कारण है कि पिछले एक दशक में मिनरल एक्सप्लोरेशन के कार्य में तेजी आई है। हमारे देश में सतत खनन विकास पर जोर दिया जाने लगा है और 2016-17 से मेजर हो या माइनर मिनरल सभी माइंस नीलाम करना अनिवार्य कर दिया गया है। बदली परिस्थितियों में यह भी साफ हो जाना चाहिए कि सरकारों की ईच्छा शक्ति पर बहुत कुछ निर्भर करता है। इसका ताजातरीन उदाहरण राजस्थान सरकार और राजस्थान का खान एवं भूविज्ञान मंत्रालय है। देश-दुनिया में अवैध खनन गतिविधियों के लिए कुख्यात माइनिंग सेक्टर को नई पहचान देने के कारगर प्रयास राजस्थान में भजन लाल शर्मा सरकार ने कर के दिखाया है। केवल एक साल की समयावधी में ही माइनिंग सेक्टर में राजस्थान समूचे देश में लंबी छलांग लगाने लगा है। दिसंबर, 24 में सरकार ने कार्यभार संभालते ही माइनिंग सेक्टर में दो दिशाओं में तेजी से कदम बढ़ाये। पहला अवैध खनन गतिविधियों पर कारगार अंकुश लगाने के लिए विशेष अभियान चलाया गया तो दूसरी और सरकार ने साफ संदेश दे दिया कि खनिज बहुल क्षेत्रों की एक्सप्लोरेशन रिपोर्ट का अध्ययन करते हुए डेलिनियेशन और प्लॉट व ब्लॉक तैयार करने के कार्य को प्राथमिकता दी जाए और विभाग इन तैयार प्लॉटों व ब्लॉकों की नीलामी का रोडमेप बनाकर पारदर्शी ऑक्शन प्रक्रिया को अमली जामा पहुंचायें। सरकार की मंशा के अनुसार विभागीय अमला भी जुट गया और नई सरकार बनने के तीन माह में ही 15 मेजर मिनरल ब्लॉकों का भारत सरकार के पोर्टल पर ई-नीलामी की गई तो एक साल से कुछ ही अधिक समय में नई सरकार बनने के बाद के जनवरी, 25 तक 15 ब्लॉकों सहित 15 जोड़ 33 ब्लॉक कुल 48 मेजर मिनरल ब्लॉकों की सफल नीलामी कर नया इतिहास रच दिया गया।

कैसे रुकें सिवरेज की सफाई में होने वाली मौत?

अशोक मधुप

कोलकाता शहर में सिवरेज की सफाई के दौरान तीन श्रमिकों की मौत हो गई। घटना कोलकता लेदर कंप्लेस में सीवरेज लाइन के साफ के दौरान हुई। सुप्रीम कोर्ट काफी पहले कह चुका है कि मरने वालों के परिवार को तीस-तीस लाख रूपया मुआवजा दिया जाए, किंतु ऐसा नहीं हो रहा। प्रदेश सरकार ने बीस-बीस लाख रूपये मुआवजा देकर ही मामला निपटा दिया। यह घटना सर्वोच्च न्यायालय के उस आदेश के चार दिन बाद हुई है, जिस आदेश में सुप्रीम कार्ट ने कहा कि कि दिल्ली, मुंबई, कलकाा, चिन्नई, बंगलूरू और हैदराबाद जैसे मैट्रोपालिटिन शहरों में मैनुअल सफाई और सीवर सफाई पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाया गया था।

दरअसल न्यायालय आदेश करता है किंतु उन आदेश के पालन के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को या तो ये आदेश पंहुच नहीं पाता। आदेश पंहुच पाता है तो फाइलों के दबाव में वे उसे पढ़ नहीं पाते। इसीलिए बार-बार आदेशों के पालन में अनदेखी होती है। इन आदेशों को संबधित अधिकारियों तक पंहुचाने की प्रदेश स्तर पर त्वरित और प्रभावी व्यवस्था होनी चाहिए।

जुलाई 2022 में लोकसभा में प्रस्तुत सरकारी आंकड़ों के अनुसार पांच साल में सीवर सफाई के दौरान 347 लोगों की मौत हुई। पांच सालों में भारत में सीवर और सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान कम से कम 347 लोगों की मौत हुई, जिनमें से 40 प्रतिशत मौतें उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और दिल्ली में हुईं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुसार, 1993 के बाद से सीवर और सेप्टिक टैंक से होने वाली मौतों के 1,248 मामलों में से इस साल मार्च तक 1,116 मामलों में मुआवजे का भुगतान किया गया है, हालांकि, 81 मामलों में मुआवजे का भुगतान अभी भी लंबित है। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि राज्यों द्वारा 51 मामले बंद कर दिए गए हैं क्योंकि मृत व्यक्तियों के कानूनी उत्तराधिकारी नहीं मिल सके। 1993 के बाद के आंकडा से पता चलता है कि कि सीवर और सेप्टिक टैंक में होने वाली मौतों के सबसे अधिक 256 मामले तमिलनाडु में सामने आए। इसके बाद गुजरात (204), उत्तर प्रदेश (131), हरियाणा (115) और दिल्ली (112) का नंबर आता है। सीवर से होने वाली मौतों के सबसे कम मामले छत्तीसगढ़ (1) में दर्ज किए गए हैं, इसके बाद त्रिपुरा और ओडिशा में 2-2 मामले, दादर और नगर हवेली (3) और झारखंड (4) आते हैं। अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक के 58 मामलों में से सबसे ज्यादा मामले तमिलनाडु (11) से हैं, इसके बाद महाराष्ट्र और राजस्थान (11-11 मामले), और गुजरात (8) तथा पंजाब (6) का नंबर आता है। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि 1993 के बाद से हुई 1,247 मौतों में से 456 मामले 2018 के बाद दर्ज किए गए हैं।

नौ अक्तूबर 2024 को दिल्ली के सरोजिनी नगर इलाके में एक कंस्ट्रक्शन साइट पर तीन मजदूरों की मौत का मामला सामने आया है। ये मजदूर सीवर लाइन साफ करने के लिए सीवर के अंदर उतरे थे। सीवर लाइन से निकल रही जहरीली गैस की वजह से तीनों मजदूरों का दम घुट गया था। स्थानीय लोगों का कहना है कि सीवर में उतरे मजदूरों के लिए सुरक्षा के कोई इंतजाम नहीं थे। 23 अक्तूबर 2024 को राजस्थान के सीकर जिले में सफाई के दौरान तीन कर्मचारियों की मौत हो गई। ये मौत लगातार होती रहती है। रूक नही पातीं।

देश में सीवर सफाई के दौरान होने वाली मौत की घटनाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने 20 अक्टूबर 2023 को कहा था कि सरकारी अधिकारियों को मरने वालों के परिजन को 30 लाख रुपए मुआवजा देना होगा।सीवर की सफाई के दौरान कोई सफाईकर्मी स्थायी दिव्यांगता का शिकार होता है तो न्यूनतम मुआवजे के रूप में उसे 20 लाख रुपए दिया जाएगा। वहीं, अन्य दिव्यांगता पर अफसर उसे 10 लाख रुपए तक का भुगतान करेंगे। जस्टिस एस रवींद्र भट और जस्टिस अरविंद कुमार की बेंच ने सीवर सफाई के दौरान होने वाली मौतों को लेकर दायर एक जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान यह फैसला सुनाया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हाथ से मैला ढोने की प्रथा पूरी तरह खत्म हो। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट्स को सीवर से होने वाली मौतों से संबंधित मामलों की निगरानी करने से ना रोके जाने का निर्देश दिया।

सरकारे और अधिकारी प्राय: मानते हैं कि न्यायालय आदेश करता रहता है। वह करें। उन्हें काम अपनी मर्जी से करना है। इसी कारण सिवरेज की सफाई में लगे कर्मचारियों को कार्य के दौरान न सुरक्षा उपकरण उपलब्ध करांए जाते हैं, न मौत होने पर मुआवजा दिया जाता है। पीड़ित के परिवार वाले न ज्यादा शिक्षित होते हैं, न संपन्न। उन्हें न्यायालय के आदेश की जानकारी ही नही होती। इतना धन भी नहीं होता कि वह न्यायालय की शरण में जाएं। इसका फायदा विभागीय अधिकारी उठाते हैं। वह अपनी मनमर्जी करते हैं। ऐसा प्राय: सभी जगह होता है। सिवरेज की सफाई में लगे कर्मचारियों की मौत की घटनाएं रोकने के लिए, उन्हें मैनुअल सिवरेज की सफाई के आदेश देने वालों पर हत्या का मुकदमा दर्ज कराने से ही मौत रूकेंगी, अन्यथा नहीं।

प्रदेश सरकारों को चाहिए कि वह एक ऐसा सेल बनाए, जो इस तरह की मौत की मोनिटरिंग करें। उनकी मौत के लिए अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार अधिकारियों के विरूद्ध कार्रवाई भी अमल में लाए। एक बात और राज्य स्तर पर बनाये सैल न्यायालयों के आदेश नगर पालिका, नगर निगम आदि में भेजने की भी तुंरत व्यवस्था हो। बताए कि यह आदेश हुआ है। सिवरेज की सफाई कराते इन नियमों का पालन करें। ये सैल ये भी मोनिटरिंग करें कि नगर निगम या नगर पालिका के पास सिवरेज की सफाई के समय प्रयोग होने वाले उपकरण हैं या नही। क्या उनके कर्मचारी सफाई करते सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग करते हैं या नही। जहां प्रयोग नही करते वहां कर्मचारियों को जागरूक किया जाए। उनके इन सुरक्षा उपकरणों के प्रयोग के लाभ बताए जाएं।उन्हें कहा जाए कि सिवरेज में उतरने से पहले सुरक्षा उपकरण पहनने से उनकी जान बच सकती है। देखने में आया है कि प्राय: स्थानीय निकाय के के पास सुरक्षा उपकरण ही नही हैं। उन्हें दबाव देकर ये उपकरण खरीदवाएं जाएं। कर्मचारियों को सुरक्षा उपकरण पहनने की प्रशिक्षण दिया जाए।

स्थानीय निकायों को कहा जाए कि वह मैनुअल सिवरेज की सफाई न कराएं। इसके लिए उपकरण खरीदें। जिन स्थानीय निकायों के पास इन उपकरण खरीदने के लिए धन नही है, उन्हें धन उपलब्ध कराया जाए। सरकारों के इस मामले में गंभीर होने से ही सिवरेज की सफाई के दौरान सफाई कर्मचारियों की मौत की घटनांए रूक सकेंगी। सिवरेज की सफाई में मरने वाले कर्मचारियों के परिवार अनाथ होने से बच जाएगें।

धोखेबाजों पर कब कार्यवाही करेगी भारत सरकार

अमेरिका और यूरोप के अन्य देशों में लाखों भारतीय अवैध रूप से रह रहे हैं। यह सभी भारतीय जहां रह रहे हैं। वहां पर भारतीय दूतावास भी हैं। अवैध दस्तावेजों के सहारे भारतीयों को विदेश में ले जाने के लिए एजेंट फर्जी दस्तावेज तैयार कराते हैं। विदेश में रोजगार और नौकरी के लिए जाने वालों से 25 से 50 लाख की वसूली करते हैं। उसके बाद एक देश से दूसरे देश में ले जाकर अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा इत्यादि देशों में ले जाकर छोड़ देते हैं। लाखों रुपए गवांने के बाद भारतीय मूल के नागरिक विदेशों में नाराकीय जीवन जी रहे हैं। भारतीय दूतावास उनकी कोई मदद नहीं करते हैं। भारत के एजेंट गलत दस्तावेजों पर प्रतिवर्ष लाखों लोगों को विदेश भेजतें हैं। उन पर भारत सरकार कार्रवाई क्यों नहीं करती है। भारत में धोखाधड़ी का यह धंधा बढ़ता ही जा रहा है। जांच एजेंसियां हाथ में चूड़ी डालकर बैठी हुई है। लाखों परिवारों का जीवन हर साल भारत में बर्बाद हो रहा है।

वोट बैंक के कारण भारी पड़ रहे हैं तुगलकी पंचायती फैसले

योगेंद्र योगी

देश को अंग्रेजों से आजाद हुए 77 साल हो गए लेकिन कानून का राज अभी तक पूरी तरह कायम नहीं हो सका। राजनीतिक दलों के वोट बैंक के कारण जातिगत पंचायतें अभी भी कानून से इतर तुगलकी फरमान दे रही हैं। इन फरमानों के आगे शासन-प्रशासन बौने साबित हो रहे हैं। राजस्थान के करौली जिले में मीणा महासभा की महापंचायत ने लड़की पक्ष द्वारा विवाह से इंकार किए जाने पर ऐसा ही एक फरमान जारी कर दिया और प्रशासन मूक-बधिर बने खड़ा रहा। महापंचायत द्वारा गठित कमेटी ने रौंसी गांव के लड़की पक्ष के लोगों पर 11 लाख रुपए, रिश्ता तय करने में मध्यस्थ रहे दो जनों पर एक-एक लाख रुपए का दंड लगाया गया। साथ ही रौंसी गांव में लड़के पक्ष पर लगाए 11 लाख के दंड को महापंचायत ने खारिज दिया।

साथ ही फैसला देने वाले रोंसी क्षेत्र के 5 लोगों को 1100 -1100 रुपए से दंडित कर 5 साल के लिए समाज की जाजम से बाहर करने की बात कही। जिन जनप्रतिनिधियों का काम कानून का शासन स्थापित कराना होता, वही कानून की धज्जियों उड़ाने वाले ऐसे आदिम फैसलों के समर्थन में खड़े नजर आए। इस महापंचायत में टोडाभीम विधायक घनश्याम महर भी पहुंचे। आश्चर्य की बात यह है कि शांति व्यवस्था व महापंचायत पर नजर बनाए रखने के नाम पर 50-60 पुलिसकर्मी भी मौजूद थे, किन्तु कोई कार्रवाई नहीं कर सके। महापंचायत की मनमाने निर्णय पर सत्तारुढ़ भाजपा और विपक्षी कांग्रेस ने कोई एतराज नहीं जताया। मानवाधिकार आयोग को भी अधिकारों के हनन करने वाले ऐसे निर्णय नजर नहीं आते। राजस्थान ही नहीं देश के दूसरे हिस्सों में भी जातिगत पंचायतें ऐसे फैसले सुनाती रही हैं। खाप पंचायतें अपने परंपरावादी फैसलों के लिए मशहूर रही हैं। मुजफ्फरनगर के सोरम गांव में खाप महापंचायत ने साल 2014 में फरमान जारी कर लड़कियों के जींस पहनने, उनके फोन और इंटरनेट यूज करने पर बैन लगाया गया था। कुछ लड़कियों के घर से भागने के बाद समाधान के रूप में यह ऐलान किया गया था। ऐसा केवल यूपी में ही नहीं हरियाणा जैसे राज्यों में भी बैन लगाया गया था। साल 2015 में बागपत में एक खाप पंचायत ने दो बहनों के साथ रेप करने और उन्हें निर्वस्त्र करके गांव में घुमाने का आदेश जारी किया था। उन्हें उनके भाई के अपराध की सजा दी गई। उनका भाई एक ऊंची जाति की महिला के साथ भाग गया था।

जुलाई 2010 में हरियाणा की सर्व खाप जाट पंचायत ने फरमान जारी किया कि लड़कियों की शादी के लिए उनके बालिग होने का इंतजार नहीं करना है। उनकी शादी अब 15 साल में ही कर देनी है। रेप की घटनाओं में हो रही बढ़ोतरी पर अंकुश लगाने के लिए यह आदेश जारी किया गया था। ऑनर किलिंग, समगोत्रिय विवाह और प्रेम विवाह को लेकर खाप पंचायत बेतुका बयान जारी करते रही हैं। खाप पंचायत को सुप्रीम कोर्ट की फटकार का ख्याल है और ना ही आलोचनाओं का, तभी तो उसके बेतुके फैसले तालिबानी औऱ तुगलकी फरमान की तरह लोगों के सिर पर पहाड़ बन कर टूटते हैं। झज्जर की खाप पंचायत का मानना था कि आर्य समाजी ढंग से होने वाली शादियों पर तत्काल से प्रतिबंध लगा देना चाहिए। खाप ने यह बेतुका फरमान लव मैरज को रोकने के लिए

सुनाया था। खाप पंचायत प्रेम विवाह के खिलाफ है। खाप ने आर्य समाज में होने वाली शादियों को दुकानदारी करार दिया था।

खाप और जातिगत पंचायतों के इस तरह के बेबुनियाद तर्क बदस्तूर जारी हैं। एक खाप ने कहा था कि बलात्कार और यौन शोषण जैसी घटनाओं को रोकने के लिए लड़कियों का बाल विवाह कर देना चाहिए ताकि वो जवान होने से पहले ही किसी की पत्नी बन जाये औऱ पुरूष उनकी और आकर्षित ना हो। महाराष्ट्र के बीड में एक महिला और उसके परिवार के सामाजिक बहिष्कार का आदेश देने पर जाति पंचायत के 9 सदस्यों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया। महिला का सामाजिक बहिष्कार इसलिए किया गया था क्योंकि उसके ससुर ने उस महिला से शादी की थी, जिससे वह प्यार करता था।

राजस्थान के चाकसू कस्बे में आपसी सहमति से 2022 में तलाक लेने की जानकारी समाज के अन्य लोगों को लगी तो उन्होंने जातीय पंचायत बैठाकर तलाक लेने के लिए प्रताड़ित किया और 1,51,000 रुपए आर्थिक दंड के रूप में देने का फैसला सुनाया। झारखंड ऐसी पंचायतों के फैसलों के लिए बदनाम रहा है। पलामू गढवा और लातेहार में 65 से अधिक पंचायतों पर एफआईआर दर्ज हुई। कई ऐसे भी मामले हैं जिन पर एफआईआर दर्ज नहीं हुई, शिकायतकर्ता सामने नहीं आए हैं। झारखंड में पंचायत के फैसले के बाद 36 से अधिक लोगों की मौतें हुई। 40 से अधिक दुष्कर्म के मामले में पंचायत बैठी है, जिनमें आरोपियों को बचाया गया। सुप्रीम कोर्ट ने ऑनर किलिंग मामले की सुनवाई करते हुए खाप पंचायत पर बड़ा फैसला सुनाया था। शीर्ष अदालत ने कहा कि खाप पंचायत का किसी भी शादी पर रोक लगाना अवैध है। अदालत ने कहा था कि अगर कोई भी संगठन शादी को रोकने की कोशिश करता है, तो वह पूरी तरह से गैर कानूनी होगा। सुप्रीम कोर्ट ने ऐसे मामलों की रोकथाम और सजा के लिए गाइडलाइन जारी की। इसके बावजूद देश के किसी न किसी कोने से पंचायतों के मनमाने निर्णय सामने आते रहते हैं। राजनीतिक दल जातिगत पंचायतों के ऐसे फैसले रोकने के बजाए इनमें वोट बैंक के हित ढूंढती नजर आती हैं। यह निश्चित है जब तक राजनीतिक दल वोट बैंक की राजनीति से ऊपर उठकर कानून का शासन करने पर एकराय नहीं होंगे, तब तक ऐसे गैरकानूनी पंचायती फैसले आते रहेंगे।

छत्तीसगढ़ वक्फ की 5000 करोड़ की प्रॉपर्टी होगी सार्वजनिक

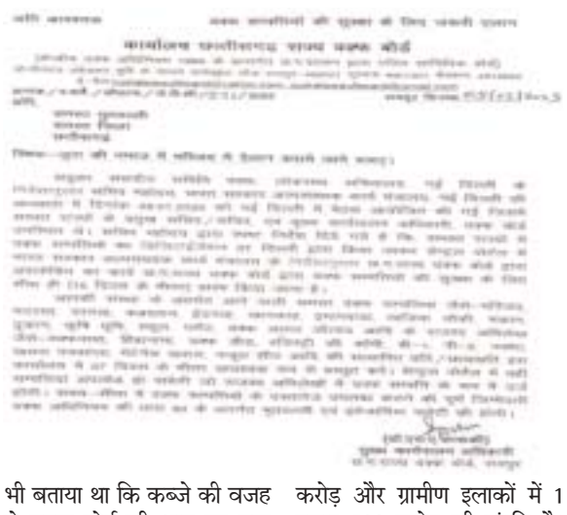

बोर्ड ने डिजिटाइजेशन के लिए मुतवल्लियों से मांगी जानकारी, किराया का भी ब्योरा मांगा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में वक्फ बोर्ड के नाम पर जितनी भी प्रॉपर्टी है, सभी की जानकारी सार्वजनिक की जाएगी। कहां कितनी संपत्ति है, इसकी जानकारी मांगी गई है। इसे डिजिटल रिकॉर्ड में अपडेट किया जाएगा। संपत्ति की जानकारी छिपाने वालों या कब्जा करने वालों पर बोर्ड कार्रवाई भी करेगा। वक्फ के पास प्रदेशभर में 5000 करोड़ से ज्यादा की प्रॉपर्टी है।

कार्यालय छत्तीसगढ़ राज्य वक्फ बोर्ड

चिट्ठी में सभी जिलों के मुतवल्लियों से मस्जिदों, मदरसों, दरगाहों, कब्रिस्तानों, दुकानों, कृषि भूमि, स्कूलों, और प्लॉट्स की जानकारी भेजने के निर्देश दिए गए हैं। इन दस्तावेजों को 12 फरवरी तक भेजने को कहा गया है। वक्फ संपत्तियों की सुरक्षा करने के लिए इनकी जानकारी सेंट्रल पोर्टल में अपलोड की जाएगी।

आईआईटी दिल्ली करेगा अपलोड: संपत्ति की जानकारी को लेकर निर्देश केंद्र सरकार की ओर से आए हैं। पिछले दिनों संयुक्त संसदीय समिति वक्फ, लोकसभा सचिवालय और सचिव भारत सरकार के अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय नई दिल्ली की अध्यक्षता में एक बैठक हुई थी। इसके बाद छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड ने ये एक्शन लिया है। वक्फ की संपत्तियों का डिजिटाइजेशन आईआईटी दिल्ली करेगा।

5 हजार करोड़ की प्रॉपर्टी: डॉ सलीम राज ने बताया कि वक्फ के पास छत्तीसगढ़ में 5 हजार करोड़ की संपत्ति है। इसमें से 90 फीसदी पर कब्जा है। रिकॉर्ड निकाले जा रहे हैं, अवैध कब्जों से संपत्ति को खाली करवा कर इसे सही उपयोग में लाया जाएगा, इस दिशा में काम हो रहा है। कुछ महीने पहले तक बोर्ड के अध्यक्ष रहे सलाम रिजवी ने भी बताया था कि कब्जे की वजह से वक्फ बोर्ड की आय का बड़ा नुकसान हो रहा है।

अलग-अलग जिलों में 2006 प्रॉपर्टी: छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष सलाम रिजवी बताते हैं कि, शहर में 3 हजार 500 करोड़ और ग्रामीण इलाकों में 1 हजार 500 करोड़ की संपत्ति है। बोर्ड के अफसरों के अनुसार, रायपुर, रायगढ़, राजनांदगांव, बिलासपुर, जगदलपुर, मुंगेली, धमतरी, दुर्ग सहित प्रदेश के अलग-अलग जिलों में 2006 संपत्तियां हैं।

नारायणपुर में बीच रास्ते सरकारी शव वाहन खराब

लाश को ट्रैक्टर से ले जाया गया घर, पेड़ से गिरकर युवक की हुई थी मौत

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर/नारायणपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में नारायणपुर जिला अस्पताल की शव वाहन बीच रास्ते में ही खराब हो गई। जिसके बाद वाहन से युवक की लाश को परिजनों ने ट्रैक्टर में शिफ्ट किया और घर लेकर गए। यह पहला मामला नहीं है, बल्कि इससे पहले भी इस तरह की स्थिति देखने को मिली है। वहीं गांववालों ने इसका विरोध किया है। दरअसल, जिला मुख्यालय से ठीक 8 किमी की दूरी पर मेटाडोंगरी गांव है। इस गांव का रहने वाला युवक महादेव सलाम सल्फी पेड़ से नीचे गिर गया। परिजन उसे अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत होना बताया। जिसके बाद शव का पोस्टमॉर्टम किया गया।

वहीं एक दिन पहले जिला अस्पताल की शव वाहन में शव को गांव लाया जा रहा था। हालांकि, शव वाहन की इतनी खस्ता हालत थी कि वाहन बीच रास्ते ही खराब हो गई। जिसके बाद परिजनों ने किराए से ट्रैक्टर का बंदोबस्त किया। फिर शव को ट्रैक्टर की ट्रॉली में शिफ्ट किया और गांव लेकर गए। जहां उसके शव का अंतिम संस्कार किया गया। गांववालों का कहना है कि, जिला अस्पताल में 108 हो या शव वाहन, सभी की यही दशा है। इसका खामियाजा गांव के लोगों को उठाना पड़ता है। क्योंकि शव लाने के लिए किराए की गाड़ी और ट्रैक्टर करने पर मनमाना पैसा वसूला जाता है।

अस्पताल में एक ही शव वाहन, वह भी कबाड़: नारायणपुर जिला अस्पताल में एक ही शव वाहन है और वह भी कबाड़ हो चुकी है। चलते-चलते गाड़ी बीच रास्ते में ही खराब हो जाती है। बार-बार मरम्मत कर उसे चलाया जा रहा है। बीच रास्ते गाड़ी खराब होने की वजह से आम ग्रामीणों को शव ले जाने काफी तकलीफों का सामना करना पड़ता है। इस संबंध में हमने जिला अस्पताल प्रबंधन से बात करने उन्हें फोन लगाया, लेकिन उनका फोन नेटवर्क कवरेज से बाहर बताया।

खोंगापानी के वार्ड क्रमांक 08 में मतदाताओं को दिया गया ईवीएम का प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन 2025 के तहत नगर पंचायत खोंगापानी के वार्ड क्रमांक 08 शिव मंदिर के पास मतदाताओं को ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) की सही उपयोग का प्रशिक्षण दिया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशानुसार आयोजित इस सत्र में मास्टर ट्रेनर ने ईवीएम की कार्यप्रणाली को विस्तार से समझाया गया। प्रशिक्षण के दौरान मास्टर ट्रेनर ने बताया कि मतदान के समय ईवीएम का सही तरीके से उपयोग कैसे किया जाता है और निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव कैसे संपन्न कराए जाते हैं। उन्होंने मतदाताओं को उनके मताधिकार के प्रति जागरूक करते हुए यह संदेश दिया कि वे बिना किसी भ्रम या संकोच के मतदान करें और अपने वोट का सही उपयोग करें। इस अवसर पर नोडल अधिकारी सहित वार्ड के अनेक नागरिक उपस्थित थे।

बिलासपुर युवा कांग्रेस का अध्यक्ष जिलाबदर

निकाय चुनाव से पहले 4 बदमाशों पर पुलिस का एक्शन, 24 घंटे के अंदर शहर छोड़ने कहा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में नगरीय निकाय चुनाव से पहले पुलिस ने हिस्ट्रीशीटर और निगरानी बदमाशों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। इसमें युवा कांग्रेस के जिलाध्यक्ष जयकिशन राजू यादव, मैडी राव सहित 4 आरोपियों का जिलाबदर किया गया है। एसपी के प्रस्ताव पर कलेक्टर ने इन अपराधियों को तत्काल जिला छोड़ने का आदेश दिया है। बदमाशों के खिलाफ थानों में जान से मारने की धमकी देने, पॉक्सो, चोरी, गुंडागर्दी, पैसों की अवैध वसूली जैसे कई अपराध दर्ज हैं।

एसपी रजनेश सिंह ने बताया कि नगरीय निकाय चुनाव को देखते हुए स्वतंत्र और भयमुक्त वातावरण में निष्पक्ष रूप से शांतिपूर्ण वातावरण बनाने के लिए लगातार सख्ती की जा रही है। इस दौरान जिले में गुंडे-बदमाशों और समाज में अशांति फैलाने वाले असामाजिक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। एसपी सिंह ने आपराधिक रिकॉर्ड और सामाजिक व्यवस्था में खलल डालने वाले निगरानी गुंडा-बदमाशों की लिस्ट बनाने के निर्देश दिए, जिनकी लगातार निगरानी की जा रही है। इसके साथ ही ऐसे अपराधी जो चुनाव को प्रभावित कर सकते हैं। उनकी आपराधिक कुंडली निकालकर जिलाबदर का प्रस्ताव भी तैयार किया गया है।

कलेक्टर ने चार बदमाशों का किया जिलाबदर: एसपी की रिपोर्ट पर कलेक्टर और जिला दंडाधिकारी अवनीश शरण ने 4 बदमाशों को जिलाबदर करने का आदेश जारी किया है। इस आदेश के तत्काल उन्हें जिले से खदेड़ने कहा गया है। जिन आरोपियों का जिलाबदर किया गया है, उनमें सिरगिट्टी के आदर्श नगर निवासी जयकिशन यादव उर्फ राजू यादव (33), सिरगिट्टी के चुचुहियापारा अन्नपूर्णा कॉलोनी निवासी समीर उर्फ बकरा मुंडी (22), तारबाहर क्षेत्र के अंडरब्रिज के पास रहने वाला पी ज्योति प्रकाश राव उर्फ मैडी राव (32) और सकरी निवासी निगरानी बदमाश विक्की पांडेय (22) शामिल हैं।

6 जिलों के सीमा के बाहर रहना होगा: जिलाबदर किए गए सभी अपराधियों को 24 घंटे के भीतर शहर छोड़ने कहा गया है। इस दौरान 6 महीने तक उन्हें बिलासपुर जिले के साथ ही जांजगीर-चांपा, कोरबा, मुंगेली, गौरेला-पेंड्रा-मारवाही और बलौदाबाजार जिले की सीमा से बाहर रहना होगा। आदेश का पालन नहीं करने पर उनके खिलाफ सख्ती से कार्रवाई की जाएगी और एफआईआर भी दर्ज किया जाएगा।

युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष समेत चारों के खिलाफ कई केस: जिन बदमाशों के खिलाफ जिलाबदर का आदेश जारी किया गया है। उनके खिलाफ पास्को, गुंडागर्दी, धमकाने, चोरी, वसूली जैसे मामलों में केस दर्ज है। पुलिस के अनुसार इन बदमाशों के खिलाफ अलग-अलग थाना में कई गंभीर केस भी है। युवक कांग्रेस के जिला अध्यक्ष जयकिशन यादव के खिलाफ तारबाहर थाना सहित आस-पास के थाना क्षेत्रों में गुंडागर्दी, गाली-गलौज, मारपीट, चोरी और जान से मारने की धमकी देने जैसे गंभीर अपराध दर्ज हैं। समीर उर्फ बकरा मुड़ी के खिलाफ सिरगिट्टी और आस-पास के थानों में मारपीट, जान से मारने की धमकी देने, गाली-गलौज, एनडीपीएस, अगवा कर शारीरिक शोषण करने और पॉस्को एक्ट जैसे गंभीर मामले दर्ज हैं।

पी ज्योति प्रकाश राव उर्फ मैडी राव के खिलाफ तारबाहर सहित अन्य थानों में अपने साथियों के साथ मिलकर मारपीट करने, जान से मारने की धमकी देने, गाली-गलौज करने के केस दर्ज हैं। विक्की पांडेय के खिलाफ मारपीट, जान से मारने की धमकी देने, गाली-गलौज, अवैध रूप से पैसों की वसूली और जान से मारने की नीयत से चोट पहुंचाने और आर्म्स एक्ट जैसे गंभीर अपराध दर्ज हैं।

घर में घुसकर महिला से 5 लोगों ने किया गैंगरेप

यूपी से मजदूरी करने सूरजपुर आए थे आरोपी, काम से गांव गया था पति

मीडिया ऑडीटर, सूरजपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सूरजपुर जिले में एक महिला से गैंगरेप हुआ है। घटना बुधवार रात की है, जब पीड़िता का पति काम से बाहर गया था तभी गांव के ही 4-5 लोगों ने घर में घुसकर वारदात को अंजाम दिया। मामला विश्रामपुर थाना क्षेत्र का है। पुलिस के मुताबिक, घटना में शामिल सभी 5 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी उत्तरप्रदेश से मजदूरी करने सूरजपुर आए थे, जो रेलवे स्टेशन के पास एक बस्ती में रह रहे थे।

ये है पूरा मामला: 35 वर्षीय पीड़िता अपने पति के साथ पिछले तीन साल से किराए के मकान में रह रही है। पति-पत्नी दोनों मजदूरी करते हैं। घटना के समय पति चार दिन से घरेलू काम के लिए कोरिया जिले स्थित गांव गया हुआ था। पीड़िता के मुताबिक, बुधवार रात करीब साढ़े आठ बजे मोहम्मद गुलाम कादिर और ठुठूवा नाम के दो व्यक्ति उसके घर आए और पति के बारे में पूछताछ की। आधी रात को जब वह घर के बाहर गुड़ाखू कर रही थी, तभी कादिर और ठुठूवा अपने तीन अन्य साथियों के साथ आए और उसे धक्का देकर घर के अंदर ले गए, जहां दुष्कर्म की वारदात की।

पीड़िता ने थाने में की शिकायत: घटना के बाद पीड़िता ने अपनी बहन को पूरी बात बताई, जिसके बाद थाने में शिकायत दर्ज कराया गया। पुलिस ने पांचों आरोपियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 70(1), 331(8) (सामूहिक बलात्कार के लिए सजा) के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की।

आरोपियों ने कबूला अपना जुर्म: विश्रामपुर थाना प्रभारी अलरिक लकड़ा ने पुलिस टीम के साथ तत्काल दबिश देकर गुलाब कादिर और ठुठूवा को हिरासत में लेकर पूछताछ की, तो उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर सामूहिक दुष्कर्म की बात स्वीकार की।

वोटर्स को देने एमपी से मंगवाई 50 लाख की शराब

70किमी पीछाकर पकड़ा बंगाल का ट्रक, रायपुर में थी डिलीवरी, बबल-रैप में छिपाई 700 पेटियां

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। 11 तारीख को निकाय चुनाव की वोटिंग से ठीक पहले रायपुर के पास बड़ी तादाद में शराब पकड़ी गई है। एक कंटेनर में भरकर शराब को लाया गया था। रायपुर-बिलासपुर हाइवे पर सिमगा के पास ताज ढाबे के करीब एक ट्रक में शराब की बड़ी खेप मिली है।

यह ट्रक (कंटेनर व्हीकल) यहां से आगे शराब सप्लाई करने वाला था। इससे पहले ही पर्दाफाश हो गया। चुनावी माहौल में इस शराब को लोगों के बीच बांटने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला था। कुछ स्थानीय लोगों से मिली खबर के बाद आबकारी विभाग की टीम ने कार्रवाई की। कंटेनर के भीतर जांच किए जाने पर करीब 700 पेटी शराब बरामद की गई है । यह शराब एमपी में बनी हुई गोवा ब्रांड की शराब है ।

शराब की इस खेप को बंगाल के ट्रक में मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ लाया गया है। कंटेनर के अंदर बबल रैप के बड़े-बड़े रोल रखे गए थे। एक नजर में देखने पर लगता कि कंटेर में कुछ नहीं है। रोल हटाने पर आबकारी विभाग के अफसरों ने देखा कि 700 पेटी शराब छिपाकर रखी गई है। इन बबल रैप का इस्तेमाल कांच की चीजों को ट्रांसपोर्ट करने, ऑनलाइन प्रोडक्ट को रैप करने में होता है। आबकारी विभाग के अधिकारी इस कार्रवाई में मिली शराब की बाजार में कीमत 50 से 56 लाख रुपए बता रहे हैं। शराब पकड़ने वाली टीम में राज्य स्तरीय उडन दस्ता और बलौदाबाजार, कवर्धा से संभाग स्तरीय उड़नदसस्ते के अफसर शामिल थे।

ऐसे पकड़ में आया ट्रक: कवर्धा आबकारी विभाग की टीम को खबर मिली कि एम से कोई ट्रक शराब लेकर प्रदेश में एंटर हुआ है। इसके बाद कवर्धा जिला आबकारी टीम ने कंटेनर का पता लगाया। इसका पीछा करते रहे, सिमगा के पास पहुंचने पर ये कंफर्म हुआ कि शराब इसी कंटेनर में है। इसके बाद इस बड़ी स्मगलिंग का खुलासा हुआ।

इन अफसरों पर जांच का जिम्मा: रायपुर की सहायक जिला आबकारी अधिकारी नीलम किरण सिंह ने बताया कि मुखबीर की सूचना पर आबकारी विभाग के अफसरों ने कवर्धा, बलौदाबाजार, रायपुर के अफसरों की टीमों ने कार्रवाई की है। कंटेरनर ट्रक चालक का नाम जाकिर हुसैन है। आबाकारी एक्ट के तहत कार्रवाई करते हुए इसे जेल भेजा जा रहा है। शराब किसे दी जाने वाली थी, कहां से लोड हुई इस बारे में पूछताछ की जा रही है। इस कार्रवाई से जुड़ी जांच कवर्धा के जिला आबकारी अधिकारी अजय दुबे , विशेश्वर साव, जलेश सिंह, , रामानंद दीवान, अभिनव कुमार रायजादा, अभिनव आनंद बख्शी, विद्या सिंह परमार, अमर पिल्ले, इम्तियाज खान, कमल मेश्राम, जगदीश उइके राजेश कौशिक, डायमंड साहू नाम के अधिकारी-कर्मचारी कर रहे हैं।

फिलहाल सामने आई जानकारी के मुताबिक ये ट्रक इंदौर से रायपुर के लिए चला था। शराब और ट्रक को मिलाकर आबकारी विभाग ने इस कार्रवाई 1 करोड़ के आस-पास कीमत की चीजें जब्त की हैं। ट्रक पश्चिम बंगाल की इंटरेक्टिव सॉल्यूशन कंपनी के नाम पर रजिस्टर्ड है, अब आबकारी विभाग के अफसर कंपनी से भी संपर्क करके ये पता लगा रहे हैं कि इतनी बड़ी तादाद में शराब किसने मंगवाई।

नई लेदरी वार्ड क्रमांक 10 में मतदाताओं को किया गया ईवीएम के प्रति जागरूक

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। आगामी नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन 2025 के मद्देनजर नगर पंचायत नई लेदरी के वार्ड नंबर 10 में मतदाताओं के लिए ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण आंगनबाड़ी केंद्र के पास संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों ने भाग लिया।

जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देश पर आयोजित इस कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर ने ईवीएम की कार्यप्रणाली को विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि मतदान प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाए रखने के लिए मतदाता को ईवीएम का सही उपयोग कैसे करना चाहिए। प्रशिक्षण के दौरान मतदाताओं को ईवीएम के संचालन की पूरी प्रक्रिया का प्रदर्शन किया गया, जिससे वे किसी भी प्रकार की भ्रांति से मुक्त होकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें। मास्टर ट्रेनर ने नागरिकों को यह संदेश दिया कि वे बिना किसी दबाव के स्वतंत्र रूप से अपने मताधिकार का उपयोग करें और लोकतंत्र को मजबूत बनाएं।

इस अवसर पर नोडल अधिकारी सहित वार्ड के कई गणमान्य नागरिक भी मौजूद रहे। उन्होंने प्रशिक्षण सत्र में सक्रिय भागीदारी निभाई और मतदान प्रक्रिया को लेकर अपने संदेहों का समाधान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित मतदाताओं ने जागरूकता बढ़ाने के इस प्रयास की सराहना की और चुनाव में उत्साहपूर्वक भाग लेने का संकल्प लिया।

बगैर अनुमति काटे 143 पेड़

भवन बनाने के लिए 20 साल पुराने पेड़ों की अवैध कटाई, एसडीएम ने नोटिस जारी कर मांगा जवाब

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में पर्यावरण संरक्षण के लिए 20 साल पहले लगाए गए हरे-भरे 143 पेड़ों को डेवलपमेंट और निर्माण कार्य के बहाने काट दिया गया। इसके लिए वन विभाग से अनुमति भी नहीं ली गई। मामला सामने आने पर जांच के बाद एसडीएम ने स्थ्रष्टरु के सीएमडी को नोटिस जारी कर तीन दिन के भीतर जवाब मांगा है। जवाब नहीं देने पर एक पक्षीय कार्रवाई करने की चेतावनी भी दी गई है। दरअसल, साउथ ईस्ट कोल फील्ड लिमिटेड कंपनी ने जब सरकंडा के चांटीडीह स्थित जमीन में मुख्यालय का निर्माण कराया, तब यहां पर्यावरण संरक्षण के लिए बड़ी संख्या में पेड़ लगाए थे। यहां मुख्यालय परिसर में नेहरू शताब्दी नगर में बड़ी संख्या में गुलमोहर के पेड़ हैं, जिससे हरियाली छाई रहती है। बताया जा रहा है कि एसईसीएल प्रबंधन ने यहां निर्माण कार्य कराने की योजना बनाई है, जिसके चलते करीब 20 साल पुराने गुलमोहर के जंगल में करीब 500 पेड़ों की अवैध कटाई करा दिया।

कलेक्टर ने शिकायत के बाद कराई जांच, 143 पेड़ों की कटाई: इस मामले की शिकायत कलेक्टर अवनीश शरण से की गई, जिस पर उन्होंने एसडीएम पीयूष तिवारी को जांच के निर्देश दिए। इसके बाद एसडीएम ने पटवारी हल्का नंबर 33 ने मामले की जांच कर प्रतिवेदन सौंपा। जांच में बताया गया कि खसरा नंबर 56, रकबा 4.2552 हेक्टेयर में लगे 143 गुलमोहर के पेड़ बिना अनुमति काटे गए हैं। काटे गए पेड़ों में 27 बड़े जिसकी मोटाई 4 मीटर और 116 पेड़ मध्यम व छोटे थे। अवैध कटाई का मामला सामने आने पर कलेक्टर के निर्देश पर एसडीएम ने एसईसीएल के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक को नोटिस जारी कर तीन दिन के भीतर जवाब मांगा है।

पर्यावरण कानून का उल्लंघन: बिना अनुमति वृक्षों की कटाई छत्तीसगढ़ भू-संसाधन संहिता, 1959 की धारा 240 और वृक्ष कटाई नियम 2022 के नियम-5 का उल्लंघन है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि यदि तीन दिन के भीतर संतोषजनक जवाब नहीं मिला, तो एसईसीएल प्रबंधन पर एक पक्षीय दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

चोरी के पैसों से कुंभ स्नान करने पहुंचे चोर

डोंगरगढ़ में 7 लाख की चोरी का मास्टरमाइंड निकला शो-रूम का कर्मचारी, साथियों संग प्रयागराज भागा

मीडिया ऑडीटर, खैरागढ़ (एजेंसी)। डोंगरगढ़ में 5 आरोपियों ने मोटर्स शो-रूम से 7 लाख की चोरी की और सीधे प्रयागराज कुंभ चले गए। पुलिस ने बताया कि आरोपी वहां लाखों श्रद्धालुओं और साधु-संतों की भीड़ में अपनी पहचान छिपाकर पुण्य कमाने का दिखावा कर रहे थे। रेलवे स्टेशन के हाईटेक कैमरों की मदद से पुलिस उन तक पहुंची और उन्हें नागपुर से गिरफ्तार कर लिया है। इनमें 2 नाबालिग भी शामिल है। पुलिस ने खुलासा करते हुए बताया कि चोरों ने वारदात के बाद कुंभ स्नान का रास्ता चुना।

दीवार में छेद करके दुकान में घुसे चोर: एएसपी राहुल देव शर्मा ने बताया कि 25 जनवरी की रात को खंडुपारा रोड स्थित गगन मोटर्स में 7 लाख रुपए की चोरी हुई थी। चोरों ने पीछे की दीवार में छेद करके दुकान में प्रवेश किया और दुकान से पैसे चुराए।

कुंभ में महंगे होटल और मस्ती के नाम पर पैसे उड़ाए: पुलिस के मुताबिक, इन लोगों ने वहां जमकर ऐश किया। कुंभ स्नान, गंगा आरती, महंगे होटलों में खाना और मस्ती के नाम पर पैसे उड़ाए। जब पैसे कम होने लगे, तो ये नागपुर लौट आए और चोरी के पैसों से शराब पार्टी और नशाखोरी में रकम उड़ा दी।

कुंभ के बाद आरोपी नागपुर लौटे: पुलिस की टीम लगातार संदिग्धों की तलाश कर रही थी। जैसे ही कुंभ यात्रा के बाद आरोपी नागपुर लौटे, पुलिस ने उन्हें हिरासत में लिया। पूछताछ में उन्होंने चोरी की पूरी कहानी बताई।

शो-रूम का कर्मचारी ही निकला चोर: पुलिस और साइबर सेल की टीम ने 11 दिनों की जांच में 300 से अधिक सीसीटीवी के फुटेज खंगाले। जांच में खुलासा हुआ कि वारदात का मास्टरमाइंड शो-रूम का ही कर्मचारी रितेश उके (36) था।

वारदात में दो नाबालिग बच्चे भी शामिल: रितेश ने अपने दो साथियों आकाश उर्फ लल्ला लाउत्रे (24) और शाहिद खान (27) के साथ मिलकर यह वारदात की, अपराध में दो नाबालिग को भी शामिल किया। सभी डोंगरगढ़ के ही रहने वाले है। चोरी के बाद पांचों ने रकम आपस में बांटी और तुरंत ट्रेन पकड़कर प्रयागराज के लिए रवाना हो गए।

पुलिस टीम को मिला नगद इनाम: पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 4.73 लाख रुपए नकद बरामद किया गया है, जबकि बाकी पैसे ऐशो-आराम में खर्च हो चुके थे। इस सफल कार्रवाई के लिए एसपी मोहित गर्ग ने डोंगरगढ़ थाना और साइबर सेल की टीम को 5 हजार नगद इनाम दिया।

सेना ने 7 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार गिराया

नई दिल्ली एजेंसी। भारतीय सेना ने 7 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार गिराया है। इनमें 3 पाकिस्तानी आर्मी के जवान भी शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट्स में सूत्रों के हवाले से बताया गया कि घटना 4 फरवरी की रात पुंछ जिले में कृष्णा घाटी के पास हुई, जब स्पष्ट के पास घुसपैठ की कोशिश की गई। भारतीय सेना की फॉरवर्ड पोस्ट पर हमले की प्लानिंग थी। इसकी सूचना इंडियन आर्मी को मिली और उन्होंने पहले ही हमला कर साजिश को नाकाम कर दिया। घुसपैठ के दौरान मारे गए 7 लोगों में 3-4 पाकिस्तान की बॉर्डर एक्शन टीम के मेंबर्स की भी मौत हो गई। यह टीम क्रॉस बॉर्डर ऑपरेशन में माहिर होती है। सूत्रों ने बताया कि इस घटना में 5 आतंकवादियों की मौत हुई है। इनमें टीम मेंबर्स का जिक्र नहीं किया गया।

दिल्ली एलजी के आदेश पर केजरीवाल के घर पहुंची एसीबी

नई दिल्ली एजेंसी। दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने दावा किया कि भाजपा उनके विधायकों और कैंडिडेट्स को फोन पर 15-15 करोड़ के ऑफर दिए। केजरीवाल ने सुबह 11.30 बजे सभी 70 कैंडिडेट्स की मीटिंग ली थी। केजरीवाल के आरोपों के बाद भाजपा ने दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना को पत्र लिखकर आरोपों की जांच की मांग की। इसके बाद एलजी ने एंटी करप्शन ब्यूरो को मामले की जांच के आदेश दिए। रिपोर्ट्स के मुताबिक, सीबीआई की टीम केजरीवाल, सांसद संजय सिंह और मुकेश अहलावत के घर जांच के लिए पहुंची। करीब डेढ़ घंटे तक केजरीवाल के घर में जांच की, लीगल नोटिस दिया और रवाना हो गई। केजरीवाल ने 6 फरवरी को 3 एजेंसियों का एग्जिट पोल आने के बाद यह आरोप लगाए। दिल्ली विधानसभा चुनाव में 70 सीटों के लिए 5 फरवरी को 60.54 प्रतिशत मतदान हुआ। नतीजे 8 फरवरी को आएंगे। केजरीवाल का आरोप- ईडी ने वोटों की संख्या शेयर करने से इनकार किया केजरीवाल ने चुनाव आयोग पर फॉर्म 17सी को अपलोड करने से इनकार करने का आरोप लगाया। इससे दिल्ली विधानसभा क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों में डाले गए वोटों की कुल संख्या का डेटा मिलता है।

डिजिटल अरेस्ट सिंडिकेट के 5 मेंबर गिरफ्तार

नई दिल्ली एजेंसी। दिल्ली पुलिस ने डिजिटल अरेस्ट सिंडिकेट में शामिल 5 लोगों को गिरफ्तार किया है। इन सभी ने दिल्ली में रहने वाले आर्मी से रिटायर्ड 81 साल के बुजुर्ग को डिजिटल अरेस्ट किया था। खुद को ईडी अधिकारी बताकर बुजुर्ग से 15 लाख ठगे थे। पीड़ित ने 8 दिसंबर 2024 को नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल में ठगी की शिकायत दर्ज कराई थी। इसके बाद दिल्ली पुलिस की साइबर सेल मामले की जांच में जुटी थी। पुलिस ने 4 आरोपियों इमरान कुरैशी, असद कुरैशी, देव सागर और जावेद को दिल्ली के पहाड़गंज इलाके से गिरफ्तार किया।

तापी बेसिन मेगा रीचार्ज विश्व की सबसे बड़ी ग्राउण्ड वाटर रीचार्ज परियोजना- मुख्यमंत्री

भोपाल एजेंसी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि तापी बेसिन मेगा रीचार्ज योजना विश्व की सबसे बड़ी ग्राउण्ड रीचार्ज परियोजना है। इस अंतर्राज्यीय संयुक्त परियोजना का अवरोध अब दूर हो गया है तथा हम शीघ्र ही महाराष्ट्र सरकार के साथ चर्चा कर करार करने की ओर बढ़ रहे हैं। जल्द ही केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को भोपाल आमंत्रित कर करार की कार्यवाही की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को मंत्रालय में तापी बेसिन मेगा रीचार्ज एवं कन्हान उप कछार परियोजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में बैठक कर अधिकारियों को निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि इन दोनों ही परियोजनाओं के शीघ्र क्रियान्वयन के लिए हम तेजी से प्रयास कर रहे हैं। तापी मेगा रिचार्ज योजना के जरिए हम महाराष्ट्र सरकार के साथ मिलकर तापी नदी की तीन धाराएं बनाकर राष्ट्रहित में नदी जल की बूंद-बूंद का उपयोग सुनिश्चित कर कृषि भूमि का कोना-कोना सिंचित करेंगे।

बैठक में जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, विधायक अर्चना चिटनीस, मुख्य सचिव अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा और मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के जल संसाधन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि तापी बेसिन मेगा रिचार्ज योजना को राष्ट्रीय जल परियोजना घोषित कराने के लिए केन्द्र सरकार से चर्चा की जाएगी। उन्होंने कहा कि तापी बेसिन और कन्हान उप कछार में मध्यप्रदेश द्वारा प्रस्तावित कन्हान (जामघाट) बहुउद्देशीय परियोजना में मध्यप्रदेश के जल हितों का विशेष ध्यान रखा जाए। इसके लिए महाराष्ट्र राज्य से सतत संवाद कर दोनों परियोजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाएं। उन्होंने कहा कि तापी बेसिन मेगा रिचार्ज योजना में कुल 31.13 टी.एम.सी. जल का उपयोग होगा।

इसमें से 11.76 टी.एम.सी मध्यप्रदेश को और 19.36 टी.एम.सी जल महाराष्ट्र राज्य के हिस्से में आएगा।

अमेरिका 487 और अवैध भारतीय प्रवासियों को भारत भेजेगा

वॉशिंगटन एजेंसी। विदेश मंत्रालय मे शुक्रवार को कहा कि अमेरिका ने 487 अवैध अप्रवासी भारतीयों को भारत भेजने के लिए चिह्नित किया है। इनमें से 298 लोगों के बारे में जानकारी दी गई है। इससे पहले 4 फरवरी को 104 अवैध अप्रवासी भारतीयों को भारत डिपोर्ट किया गया था। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने बताया कि आगे इस बात का ख्याल रखा जाएगा कि भारतीयों को भेजते वक्त कोई दुर्व्यवहार नहीं होना चाहिए। ऐसा कोई भी मामला हमारे सामने आएगा तो हम उसे अमेरिका के सामने उठाएंगे। मिस्री ने बताया कि भारतीयों को 4 फरवरी को भारत भेजते वक्त उन्हें हथकड़ी और बेड़ियां पहनाने के मुद्दे को अमेरिकी अधिकारियों के सामने उठाया है। उन्होंने कहा कि निर्दोष लोगों को गुमराह करके अवैध तरीके से अमेरिका भेजना कैंसर

जैसी बीमारी है। ऐसा करने वालों पर केस होना चाहिए।

विदेश सचिव ने कहा कि डिपोर्टेशन कोई नई बात नहीं है। इस बारे में विदेश मंत्री ने भी कल संसद में बताया था। दुनिया का कोई भी देश अगर अपने नागरिकों को वापस स्वीकार करना चाहता है तो उसे यह यकीन चाहिए होता है कि जो भी वापस आ रहा है वह उसका नागरिक है, क्योंकि इससे सुरक्षा के मुद्दे जुड़े हैं। अमेरिका से डिपोर्ट हो रहे भारतीय प्रवासियों की वापसी के बाद कई नए खुलासे हो रहे हैं। अमेरिका ने अब तक बिना वैध दस्तावेज वाले 20,407 भारतीयों को चिह्नित किया है। इन सभी को अवैध भारतीय अप्रवासी कहा जाता है। ये अंतिम बेदखली आदेश (फाइनल रिमूवल ऑर्डर) के इंतजार में हैं। इनमें से 2,467 भारतीय इमिग्रेशन एंड कस्टम एनफोर्समेंट के डिटेंशन सेंटर्स में कैद थे। इन्हीं में से 104 को हाल में भारत डिपोर्ट किया गया।

इसके अलावा 17,940 भारतीय ऐसे हैं जो बाहर हैं, इनमें से कई भारतीयों के पैरों में डिजिटल ट्रैकर (एंकल मॉनीटर) लगाए गए हैं।

राहुल बोले-महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में वोटर्स लिस्ट में फर्जीवाड़ा हुआ

नई दिल्ली एजेंसी। राहुल गांधी, शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत और एनसीपी-एससीपी सांसद सुप्रिया सुले ने दिल्ली में एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। इसमें उन्होंने चुनाव आयोग पर आरोप लगाए। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में फर्जी तरीके से वोटर्स जोड़े जाने का आरोप लगाया है। राहुल ने दिल्ली में शिवसेना (उद्ध) सांसद संजय राउत और एनसीपी-एसपी सांसद सुप्रिया सुले के साथ जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस की। राहुल गांधी ने आरोप लगाया है कि महाराष्ट्र चुनाव में गड़बड़ी हुई। वोटर लिस्ट में नए मतदाता जोड़े गए, ताकि भाजपा की जीत हो सके। राहुल ने इलेक्शन कमीशन से वोटर्स का डेटा मांगा है। इसे लेकर चुनाव आयोग ने एक्स पोस्ट में कहा कि सीईसी के लिए मतदाता सबसे पहले आते हैं, इसके बाद सभी पॉलिटिकल पार्टियां चुनाव की प्रमुख स्टेकहोल्डर हैं। इलेक्शन कमीशन पार्टियों के विचारों, सुझावों और सवालों को गहराई से महत्व देता है। कमीशन पूरे देश में समान रूप से अपनाई गई चुनावी प्रक्रियाओं की जानकारी लिखित रूप में पूरे तथ्यों के साथ देगा। राहुल ने आरोप लगाया कि लोकसभा चुनाव के लिए पांच साल में महाराष्ट्र में 32 लाख वोटर्स जोड़े गए, जबकि इसके पांच महीने बाद विधानसभा चुनाव के लिए 39 लाख वोटर्स को जोड़ा गया।

बजट सत्र का आज छठा दिन, कांग्रेस बोली- राज्यों के लिए बजट का बंटवारा सही नहीं

नई दिल्ली एजेंसी। बजट सत्र के छठे दिन लोकसभा में बजट एलोकेशन का मुद्दा उछला। लोकसभा में कांग्रेस सांसद धर्मवीर गांधी ने कहा कि भारत को उसके राज्य बनाते हैं न कि केंद्र। राज्यों के लिए बजट में बंटवारा सही से नहीं किया गया है। पंजाब को कोई बजट नहीं दिया गया है। कांग्रेस सांसद के बयान पर भाजपा सांसद राव राजेंदर सिंह ने कहा, इतने सालों में कांग्रेस ने जो नुकसान पहुंचाया है, ये उसका नतीजा है। बजट पर बहस के दौरान सपा सांसद ने अमेरिका से भारत लाए गए अप्रवासी भारतीयों का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि भारत डिपोर्ट किए गए भारतीयों के साथ सही व्यवहार नहीं किया गया। कॉमर्स एंड इंडस्ट्री मिनिस्टर पीयूष गोयल ने शुक्रवार को राज्यसभा में कहा कि लैब-ग्रोन डायमंड इंडस्ट्री के लिए अतिरिक्त रेगुलेशन की कोई जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि मौजूदा नियमों के तहत इस सेक्टर की अच्छी ग्रोथ हुई है। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में नेचुरल डायमंड्स के लिए किंबर्ली प्रोसेस सर्टिफिकेट मान्य है। जहां भी हमने इंडस्ट्री को खुलकर काम करने दिया है, वहां इंडस्ट्री फली-फूली है।

कोलकाता रेप-मर्डर केस, कलकत्ता हाईकोर्ट में सीबीआई की याचिका मंजूर

कोलकाता एजेंसी। कलकत्ता हाईकोर्ट ने शुक्रवार को आरजी कर रेप-मर्डर केस से जुड़े मामले में सुनवाई की। कोर्ट ने पश्चिम बंगाल सरकार की याचिका खारिज कर दी और सीबीआई की याचिका स्वीकार कर ली। दोनों ने दोषी संजय रॉय को निचली अदालत से मिली आजीवन कारावास की सजा को चुनौती दी थी। दोनों याचिकाओं में संजय के

लिए मृत्युदंड की मांग की गई थी। जस्टिस देबांगसु बसाक और एमडी सब्बार रशीदी की बेंच ने बंगाल सरकार से कहा कि राज्य सरकार के पास सजा-ए-मौत देने की मांग का अधिकार नहीं है। कोर्ट ने सीबीआई के पक्ष में फैसला सुनाते हुए कहा कि वह अभियोजन एजेंसी थी, इसलिए उसे सजा की अवधि को चुनौती देने का अधिकार है। सियालदह कोर्ट ने संजय रॉय को 20 जनवरी को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। 27 जनवरी को हुई सुनवाई कलकत्ता हाईकोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था।

छुट्टी न मिलने पर 4 सहकर्मियों को चाकू मारा

कोलकाता एजेंसी। पश्चिम बंगाल के कोलकाता में सरकारी कर्मचारी ने छुट्टी न मिलने पर 4 साथी कर्मचारियों पर चाकू से हमला कर दिया। इसके बाद वो खून से सना चाकू लेकर सड़क पर घूमता रहा। पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया है। अधिकारियों के मुताबिक, उत्तर 24 परगना जिले के सोदेपुर के घोला का रहने वाला अमित सरकार पश्चिम बंगाल सरकार के टेक्निकल एजुकेशन डिपार्टमेंट में है। वो अभी कोलकाता के न्यूटाउन इलाके में कारीगरी भवन में पोस्टेड है। शुक्रवार सुबह छुट्टी को लेकर उसका साथी कर्मचारियों से झगड़ा हो गया, जिसके बाद उसने उनपर चाकू से हमला कर दिया। चारों घायलों- जयदेव चक्रवर्ती, शांतनु साहा, सार्था लाते और शेख सताबुल को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। इनमें से दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। हमला करने के बाद अमित सरकार ऑफिस से निकलकर सड़क पर भागने लगा। राहगीरों ने इसकी वीडियो बना ली। इन वीडियो में वो दिनदहाड़े चाकू लेकर घूमते दिख रहा है, उसकी पीठ पर एक बैग और हाथ में एक और बैग है। वो राहगीरों को उसके पास न आने की चेतावनी दे रहा है। पुलिस का कहना है कि सीनियर्स ने जब अमित को छुट्टी देने से मना कर दिया गया तो वह भड़क गया। उन्हें छुट्टी क्यों नहीं दी गई, इसका अभी पता नहीं चल पाया है।

बरेली में मांझा फैक्ट्री में ब्लास्ट, 3 के चीथड़े उड़े

बरेली एजेंसी। बरेली में मांझा फैक्ट्री में ब्लास्ट हो गया। हादसे में 3 लोगों की मौत हो गई। फैक्ट्री मालिक का हाथ कटकर 5 फीट दूर जा गिरा। दो मजदूरों के चीथड़े उड़ गए। हादसा इतना भीषण था कि फैक्ट्री की दीवार ढह गई।

आसपास का इलाका थर्रा गया। लोगों को लगा कि भूकंप आया है। डरकर बाहर निकले तो हादसा देखकर कांप गए। किसी का हाथ तो किसी का पैर कटकर अलग हो गया था। फैक्ट्री मालिक अतीक रजा (45) और मजदूर सरताज (24) की मौत हो गई थी। मजदूर फैजान (29) तड़प रहा था। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन इलाज के दौरान उसकी भी मौत हो गई। विस्फोट इतना जोरदार था कि डर गए सरताज की मौसी गुड़िया ने बताया- कारखाने में सुबह मांझे के शीशे की ग्रांड के साथ एक धमाका हुआ। हम लोग डर गए। भागकर मौके पर पहुंचे। देखा तो सरताज बुरी तरह से घायल था। आनन-फानन में हम उसे अस्पताल ले गए। जहां उसकी मौत हो गई।

मुरादाबाद में रईसजादों ने कार से 6 छात्राओं को रौंदा

मुरादाबाद एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में शुक्रवार तेज रफ्तार कार ने 12वीं की 6 छात्राओं को रौंद दिया। हादसे में छात्राएं उछलकर कई मीटर दूर गिरीं। एक छात्रा कार के बोनट में फंस गई। गाड़ी ने उसे कुचल दिया। हादसे के वक्त कार 100 की स्पीड में थी। राहगीरों ने कार को दौड़कर रोका। तभी 4 युवक कार से उतरकर भाग गए। कार चला रहे युवक को लोगों ने पकड़कर पुलिस के हवाले कर

दिया। एक आरोपी के पिता बड़े कपड़ा कारोबारी हैं। सभी छात्राएं शिरडी साईं स्कूल की हैं। हादसे के वक्त वे स्कूल से लौट रही थीं। हादसा शुक्रवार दोपहर 12 बजे रामगंगा विहार में गोल्डन गेट और आनंदम सिटी हाउसिंग सोसाइटी वाली रोड का है। मुरादाबाद पुलिस ने बताया कि कार चला रहा युवक ड्राइविंग सीख रहा था। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या के प्रयास की एफआईआर दर्ज की है।

हादसे के बाद छात्राएं सड़क पर इधर-उधर पड़ी रहीं। उनके कपड़े खून से सने थे। किसी के सिर तो किसी के हाथ-पैर में गंभीर चोट थी। मौके पर पहुंची पुलिस ने राहगीरों की मदद से छात्राओं को अस्पताल पहुंचाया।

नागपुर में बर्ड फ्लू का प्रकोप, 3054 मुर्गियों को किया गया नष्ट

नागपुर एजेंसी। नागपुर में बर्ड फ्लू के बढ़ते प्रकोप के बाद प्रशासन ने सतर्कता बरतनी शुरू कर दी है। केंद्र सरकार के निर्देशों के अनुसार पशुपालन विभाग और महानगर पालिका ने 5 फरवरी को प्रभावित क्षेत्र से मुर्गियों को नष्ट करने का काम शुरू किया। दो दिनों में कुल 3054 मुर्गियों को नष्ट किया गया है। यह कदम बर्ड फ्लू के बढ़ते खतरे को रोकने के लिए उठाया गया है। बता दें कि 31 जनवरी को नागपुर के ताजबाग इलाके में एक घर में तीन मुर्गियां मृत पाई गईं। पशुपालन विभाग ने इनके सैंपल की जांच की और इनकी रिपोर्ट ने बर्ड फ्लू का संकेत दिया। इसके बाद भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), भोपाल और पुणे के रोग जांच विभाग को सैंपल भेजे गए। जांच में पुष्टि हुई कि ये मुर्गियां बर्ड फ्लू से मरी थीं। इस रिपोर्ट के बाद ताजबाग के आसपास के एक किलोमीटर के इलाके को प्रभावित क्षेत्र घोषित किया गया और आसपास के नौ किलोमीटर क्षेत्र को निगरानी क्षेत्र के रूप में चिह्नित किया गया।

मईया सम्मान योजा 2025-जल्द आएगा मंईयां सम्मान योजना की छठी किस्त का पैसा!

रांची एजेंसी। झारखंड सरकार की मंईयां सम्मान योजनाका जनवरी माह का भुगतान अभी तक लाभार्थियों के खाते में नहीं पहुंचा है। जिसकी वजह से लाभुकों के चेहरे पर मायूसी छाई हुई है। वहीं इस देरी की वजह से सभी बहन-बेटियां बेसब्री से राशि का इंतजार कर रही है। बता दें कि, विभाग की ओर से बताया गया है कि,योजना में गड़बड़ी सामने आने के बाद सरकार ने सभी लाभार्थियों के पुन: सत्यापन का आदेश दिया। पिछले एक महीने से यह सत्यापन

प्रक्रिया चल रही है और अब यह अपने अंतिम चरण में पहुंच चुकी है। सत्यापन पूरा होते ही छठी किस्त का भुगतान शुरू कर दिया जाएगा। बता दें कि, मंईयां सम्मान योजना को लेकर खाद्य आपूर्ति विभाग ने निर्देश जारी किया है कि, सभी जिलों के आपूर्ति पदाधिकारी राशन कार्डधारियों का 25 फरवरी तक ई-केवाईसी अनिवार्य रूप से करा लें। वहीं विभाग की तरफ से ये स्पष्ट किया गया कि, मंईयां सम्मान योजना का लाभ देने में आ रही अड़चनों को दूर करने के लिए लिया गया है। मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना की छठी किस्त आने का लाभुक इंतजार कर रहे हैं।

महाकुंभ में फिर आग लगी, 22 पंडाल जले

प्रयागराज एजेंसी। महाकुंभ मेला क्षेत्र में शुक्रवार को फिर आग लग गई। इसमें 20-22 पंडाल जल गए। आग इतनी तेज थी कि जब तक दमकल पहुंची, तब तक पूरा पंडाल जल गया। हादसा सेक्टर-18 स्थित शंकराचार्य मार्ग पर हुआ। यहां संत हरिहरानंद का पंडाल बना है। सुबह करीब 11 बजे अचानक यहां आग लग गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि आग लगने के बाद सिलेंडर फटने जैसे धमाके हुए। मौके पर पहुंचे फायर फाइटर्स ने मोर्चा संभाला। अनाउंस करके भीड़ को हटाया। चारों तरफ बैरिकेडिंग की। करीब 40 मिनट में आग पर काबू पाया। घटना में कोई जनहानि नहीं हुई। अभी तक आग लगने की वजह क्लियर नहीं है। महाकुंभ में 20 दिन में आग लगने की यह तीसरी घटना है। इससे पहले सेक्टर- 22 और सेक्टर

19 में आग लग चुकी है। प्रत्यक्षदर्शी ने बताया- आग लगने के बाद अफरातफरी मच गई। कुछ ही देर में आग ने विकराल रूप ले लिया। धुएं के गुबार उठने लगे। यह देखकर हम लोग डर गए। हम लोगों ने भागकर जान बचाई। कई पंडाल जल कर राख हो गए हैं। एसपी सिटी सर्वेश कुमार मिश्रा ने बताया- पंडाल में पर्दे लगे हुए थे। इस वजह से आग तेजी से फैली।

बिहार कैबिनेट ने खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए 21.57 करोड़ रुपये की मंजूरी दी

पटना एजेंसी। बिहार कैबिनेट ने महिला विश्व कप कबड्डी चैम्पियनशिप और सेपकटकरा विश्व कप (महिला एवं पुरूष) 2025 के आयोजन के लिए 21.57 करोड़ रुपए से अधिक की राशि को मंजूरी प्रदान कर दी। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में राज्य कैबिनेट की बैठक के बाद मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा, ''बिहार में पहली बार महिला विश्व कप कबड्डी चैम्पियनशिप 2025 का आयोजन सात से 12 मार्च तक बिहार राज्य खेल अकादमी, राजगीर में प्रस्तावित है।'' उन्होंने बताया कि कैबिनेट ने महिला विश्व कप कबड्डी चैम्पियनशिप 2025 के आयोजन पर होने वाले व्यय की कुल राशि को स्वीकृति दी जो आठ करोड़ 25 लाख 72 हजार 729 रुपये है। सिद्धार्थ ने बताया कि बिहार में पहली बार सेपकटकरा विश्व कप (महिला एवं पुरूष) 2025 का आयोजन भी 18 से 26 मार्च तक पटना के पाटलिपुत्र खेल परिसर में प्रस्तावित है। उन्होंने बताया कि कैबिनेट ने इस प्रतियोगिता के लिए 13 करोड़ 31 लाख 36 हजार रुपये की राशि को स्वीकृति दी।

कटक में भारत की प्लेइंग 11 में हो सकते हैं ये दो बदलाव

नई दिल्ली एजेंसी। भारतीय टीम ने गुरुवार को इंग्लैंड को 4 विकेट से हराकर 3 मैचों की वनडे सीरीज की शुरुआत की। चैंपियंस ट्रॉफी से पहले भारत को तैयारियों का जायजा लेने के लिए 2 और मैच बाकी है। इन 2 मैचों में टीम अपने सभी विकल्प आजमाने का प्रयास करेगी। ऐसे में रविवार को कटक में भारतीय टीम की प्लेइंग 11 में 2 बदलाव हो सकता है।

टीम इंडिया की प्लेइंग 11 में 1 बदलाव बल्लेबाजी और दूसरा गेंदबाजी में हो सकता है। बल्लेबाजी में बदलाव तो तय है। विराट कोहली घुटने में तकलीफ के कारण पहला वनडे नहीं खेले। दूसरे वनडे में उनकी वापसी तय है। नागपुर में ताबड़तोड़ अर्धशतक जड़ने वाले श्रेयस अय्यर ने मैच के बाद खुलासा किया कि कोहली उपलब्ध होते तो वह प्लेइंग 11 में नहीं होते।

विराट कोहली के ना होने पर यशस्वी जायसवाल ने डेब्यू किया। उनका प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा। श्रेयस अय्यर की बातों से ऐसा लगा कि रोहित शर्मा के साथ यशस्वी ओपनिंग के पसंद हैं। शुभमन गिल नंबर 3 और विराट कोहली नंबर 4 पर होते। इसकी एक वजह कोच गौतम गंभीर हैं, जिनको लेफ्ट एंड राइट हैंड कॉम्बिनेशन पसंद है। नागपुर में श्रेयस अय्यर ने जिस तरह की बल्लेबाजी की उन्हें प्लेइंग 11 से बाहर रख पाना मुश्किल है। ऐसे में कोहली की वापसी जायसवाल की जगह हो सकती है।

चैंपियंस ट्रॉफी से पहले भारतीय टीम को अपने सभी विकल्प आजमाने हैं। ऐसे में गेंदबाजी में भी एक बदलाव हो सकता है। हर्षित राणा की जगह अर्शदीप सिंह को मौका मिल सकता है। जसप्रीत बुमराह की फिटनेस रिपोर्ट अभी नहीं आई है। ऐसे में अर्शदीप और राणा को दो-दो मैच दिए जा सकते हैं। इसके अलावा कुलदीप यादव ने चोट से वापसी की है। ऐसे में उन्हें दूसरे वनडे में भी मौका मिल सकता है।

इस पूर्व क्रिकेटर का दावा, कहा- चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में नहीं होंगे जसप्रीत बुमराह

नई दिल्ली एजेंसी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 शुरू होने में महज 2 हफ्ते से भी कम का समय है। अभी तक भारत के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की फिटनेस पर कोई अपडेट नहीं है। ऑस्ट्रेलिया में सिडनी टेस्ट के दौरान जनवरी की शुरुआत में जसप्रीत बुमराह को पीठ में समस्या हुईथी। इसके बाद से वह मैदान से दूर हैं। फिलहाल, वह बेंगलुरु में नेशनल क्रिकेट एकेडमी में हैं। इस बीच इंग्लैंड के खिलाफ पहले वनडे में भारत के लिए तेज गेंदबाज हर्षित राणा ने डेब्यू किया। इस बीच पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने कहा कि इंग्लैंड के खिलाफ हर्षित राणा का वनडे डेब्यू इस बात का संकेत है कि जसप्रीत बुमराह की चैंपियंस ट्रॉफी के लिए उपलब्धता की संभावना काफी कम है। अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए आकाश चोपड़ा ने भारत-इंग्लैंड के बीच पहले वनडे में हर्षित के चयन का विश्लेषण करते हुए कहा कि इस तेज गेंदबाज के खेलने से अर्शदीप सिंह की टीम में वापसी में और देरी हो गई है। आकाश चोपड़ा ने कहा कि, हर्षित राणा का डेब्यू मुझे क्या बता रहा है? मुझे बता रहा है कि जसप्रीत बुमराह की चैंपियंस ट्रॉफी के लिए उपलब्धत की संभावना बहुत कम है। आपने इसी वजह से हर्षित का डेब्यू कराया है। क्योंकि आप सोच रहे हैं अगर चैंपियंस ट्रॉफी में बुमराह नहीं होंगे और मुझे हर्षित को ले जाना होगा क्योंकि सिराज से आगे हैं वो इस समय। फिर बिना डेब्यू के वहां ले जाना वो दिल थोड़ा तेज धड़केगा भी आपका तो आपने डेब्यू करा दिया।

टीम इंडिया ने इंग्लैंड को 4 विकेट से रौंधा

नई दिल्ली एजेंसी। भारत और इंग्लैंड के बीच नागपुर में पहला वनडे खेला गया, जिसे टीम इंडिया ने 4 विकेट से जीत लिया। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड टीम ने 248 रन बनाए जिसके जवाब में भारतीय टीम ने 40 ओवर से पहले ही लक्ष्य का हासिल कर लिया। इंग्लैंड की ओर से कप्तान जोस बटलर और जैकब बेथेल ने फिफ्टी ठोकी जबकि भारत के लिए हर्षित राणा और रविंद्र जडेजा ने 3-3 विकेट झटके। वहीं भारत के लिए शुभमन गिल, श्रेयस अय्यर और अक्षर पटेल ने अर्धशतकीय पारी खेलकर टीम को बेहतरीन जीत दिलाई।

इंग्लैंड की टीम के कप्तान जोस बटलर ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की। कप्तान का ये फैसला शुरुआत से सही साबित हुआ लेकिन 70 से ज्यादा रन बनने के बाद एक के बाद एक करके विकेट गिरना शुरू हुए। 75 रनों पर पहला विकेट गिरा था और 77 रन पर तीन विकेट गिर गए थे। इस तरह इंग्लैंड की टीम 248 रन बनाकर ढेर हो गई। दो बल्लेबाजों ने इंग्लैंड के लिए अर्धशतक लगाया।

कप्तान जोस बटलर ने 52 और जैकब बेथेल ने 51 रनों की पारी खेली। 43 रन फिल सॉल्ट ने बनाए। इनके अलावा 32 रन बेन डकेट के बल्ले से निकले। बाकी के बल्लेबाज फ्लॉप रहे।

किदांबी श्रीकांत खेल के लिए बना मांसाहारी, तोड़ा परिवार का रिवाज, भाई की जिद से बना वर्ल्ड नंबर 1

नई दिल्ली एजेंसी। पूर्व विश्व नंबर एक खिलाड़ी और ओलंपियन किदांबी श्रीकांत यकीनन भारत के सर्वश्रेष्ठ बैडमिंटन खिलाड़ियों में से एक हैं। विश्व रैंकिंग में नंबर 1 स्थान पर पहुंचने के साथ-साथ वह विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने वाले पहले भारतीय व्यक्ति बन गए हैं। वे 2021 बैडमिंटन विश्व चैंपियनशिप के पुरुष एकल के फाइनल में पहुंचने वाले और बीडब्लयूएफ टूर में सुपर सीरीज प्रीमियर इवेंट में पुरुषों का खिताब जीतने वाले एकमात्र भारतीय खिलाड़ी भी हैं। किदांबी को 2018 में भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया था और 2015 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

आंध्र प्रदेश के रावुलापलेम में श्रीकांत नम्मालवार किदांबी का जन्म 7 फरवरी 1993 एक तेलुगु परिवार में हुआ था । उनके पिता केवीएस कृष्णा एक जमींदार हैं और उनकी माँ राधा एक गृहिणी हैं। किदांबी श्रीकांत के बड़े भाई के. नंदगोपाल भी बैडमिंटन खिलाड़ी हैं और अपने भाई के साथ जूनियर राष्ट्रीय चैंपियन हैं। वे 2008 तक एक ही घर में रहते थे और फिर श्रीकांत अपनी प्रैक्टिस जारी रखने के लिए गोपीचंद अकादमी चले गए। वह अपने बड़े भाई से प्रेरित होकर 2001 में गुंटूर में बैडमिंटन खेलना शुरू किया। अगले साल वो और उनके भाई दो साल के प्रशिक्षण के लिए आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम के स्पोर्ट्स अकादमी में चले गए। जहां कोच ने उन्हें डबल्स के बजाय सिंगल्स खेलने के लिए प्रोत्साहित किया।

किदांबी श्रीकांत का शुरुआती सफर

उन्हें पहली बड़ी उपलब्धि साल 2011 में मिली जब उन्होंने कॉमनवेल्थ यूथ गेम्स में रजत पदक जीता, जिसके बाद उन्होंने ऑल इंडिया जूनियर इंटरनेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप में 2 स्वर्ण पदक जीते। उनकी सफलता 2016 में सैयद मोदी इंटरनेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप ग्रां प्री गोल्ड खिताब के साथ-साथ पुरुषों की टीम में दो स्वर्ण और 2016 के दक्षिण एशियाई खेलों में पुरुष एकल में जीत के साथ जारी रही। 2016 के रियो ओलंपिक में, किदांबी श्रीकांत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दिग्गज लिन डैन के साथ एक शानदार मैच खेला।

जीते कई बड़े खिताब

अगले साल किदांबी श्रीकांत और बी साई प्रणीत ने बैडमिंटन में किसी रैंकिंग इवेंट के फाइनल में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय जोड़ी बनकर और इतिहास रच दिया। भले ही वो फाइनल हार गए, लेकिन किदांबी श्रीकांत ने इंडोनेशिया सुपर सीरीज और ऑस्ट्रेलियाई सुपर सीरीज जीतने के बाद 2017 में इतिहास की किताबों को फिर से लिखना शुरु कर दिया और लगातार तीन सुपर सीरीज फाइनल में आने वाले पहले भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी बने। उन्होंने उस वर्ष डेनमार्क सुपर सीरीज और फ्रेंच सुपर सीरीज भी जीतीं। उस साल किदांबी ने कई कीर्तिमान बनाए।

विश्व नंबर 1 बनकर रचा इतिहास

गोल्ड कोस्ट 2018 राष्ट्रमंडल खेलों में भी उनका शानदार प्रदर्शन जारी रहा, जहां वो मिश्रित टीम स्पर्धा में स्वर्ण और एकल स्पर्धा में रजत पदक पर कब्जा करने के बाद नंबर एक स्थान पर पहुंच गए। लेकिन वहीं से किदांबी की फॉर्म गिरती चली गई। लगातार चोटों के कारण एक पूरी सीरीज में रुकावट, भारतीय खिलाड़ी ने चोट से जूझते हुए खेल में वापसी करने के लिए काफी संघर्ष किया, इन वजहों से वह टोक्यो 2020 ओलंपिक से चूक गए। हालांकि, किदांबी ने 2021 के अंत में बेहतरीन परिणामों के साथ वापसी की।

शानदार फॉर्म के साथ किदांबी श्रीकांत ने 2021 क्क्षुस्न विश्व चैंपियनशिप में एक ऐतिहासिक पुरुष एकल रजत के साथ वर्ष का अंत किया और विश्व रैंकिंग के शीर्ष 10 में वापसी की। इसके बाद किदांबी ने मई 2022 में अपनी पहली थॉमस कप जीत के लिए एक युवा भारतीय टीम का नेतृत्व किया। उन्होंने अगस्त में आयोजित राष्ट्रमंडल खेल 2022 के एकल प्रतिस्पर्धा में कांस्य पदक हासिल किया। जबकि, मिश्रित टीम स्पर्धा में उन्होंने रजत पदक जीता।

अप्रैल से चुनिंदा प्रतियोगिताओं में नई स्कोरिंग प्रणाली का परीक्षण करेगा बीडब्ल्यूएफ

BWF

नई दिल्ली एजेंसी। खेल के प्रति नए दर्शकों को आकर्षित करने और मैचों को छोटा करने के उद्देश्य से बैडमिंटन विश्व महासंघ (बीडब्ल्यूएफ) इस साल अप्रैल से कम से कम छह महीनों के लिए चुनिंदा प्रतियोगिताओं में 15 अंक के तीन गेम की स्कोरिंग प्रणाली का परीक्षण करेगा। मौजूदा प्रारूप में 21 अंक के 'बेस्ट ऑफ थ्री गेम' (दो गेम जीतने वाला विजेता) मैच होते हैं। विश्व संचालन संस्था की फैसला लेने वाली संस्था बीडब्ल्यूएफ परिषद ने नवंबर में कुआलालंपुर में अपनी बैठक के दौरान मौजूदा स्कोरिंग प्रणाली को बदलने के लिए 15 अंक के तीन गेम की स्कोरिंग प्रणाली का समर्थन किया था जो पहले से ही बैडमिंटन के वैकल्पिक नियमों का हिस्सा है। बीडब्ल्यूएफ ने कहा, ''बीडब्ल्यूएफ परिषद ने अप्रैल से सितंबर-अक्टूबर 2025 तक चुनिंदा महाद्वीपीय चैंपियनशिप, ग्रेड 3 टूर्नामेंट, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय लीग और राष्ट्रीय टूर्नामेंट में 15 अंक के तीन गेम प्रणाली का व्यावहारिक परीक्षण करने की योजना को मंजूरी दी।'' इंटरनेशनल चैलेंज, इंटरनेशनल सीरीज और फ्यूचर सीरीज प्रतियोगिता ग्रेड 3 टूर्नामेंट के अंतर्गत आती हैं। नई स्कोरिंग प्रणाली को चुनने के पीछे के कारणों को समझाते हुए बीडब्ल्यूएफ ने कहा, ''मौजूदा प्रणाली की तुलना में 15 अंक के तीन गेम में कम अंक होते हैं जिससे यह संभावना बढ़ जाती है कि प्रत्येक अंक अधिक रोमांचक होगा। मौजूदा प्रणाली की तुलना में 15 अंक के तीन गेम में नतीजा तेजी से निकलता है और प्रत्येक गेम और कुल गेम की संख्या दोनों में उत्साह का अच्छा संतुलन बनाता है।'' बीडब्ल्यूएफ ने यह भी कहा कि 15 अंक के तीन गेम प्रणाली से मैच छोटे होंगे, कार्यक्रम बेहतर होगा, प्रशंसकों की दिलचस्पी बनी रहेगी और इससे खिलाड़ियों के स्वास्थ्य पर असर पड़ेगा और वे कम थकेंगे। उन्होंने कहा, ''15 अंक के तीन गेम की प्रणाली में रैलियों की संख्या भी कम होने की संभावना है और इससे गेम का समय ज्यादा निरंतर रहेगा। परीक्षण के परिणाम के बाद बीडब्ल्यूएफ परिषद अंतिम निर्णय लेगी कि इस नई प्रणाली को बीडब्ल्यूएफ की वार्षिक आम बैठक 2026 में प्रस्तावित किया जाए या नहीं।

मुसीबतों से भरे रहे हैं नेमार दा के बचपन के दिन, पिता करते थे मजदूरी, झोपड़ी में दिन काटने को हुए मजबूर

नई दिल्ली एजेंसी। फुटबॉल जगत में चमक रहे ब्राजील की टीम के स्टार नेमार का पूरा नाम नेमार दा सिल्वा सैंटोस जूनियर है। वह एक पेशेवर फुटबॉलर हैं जो अल-हिलाल और ब्राजील की राष्ट्रीय टीम के लिए फॉरवर्ड के रूप में खेलते है। नेमार का जन्म आज के दिन यानी 5 फरवरी 1992 को मोगी दास क्रूज, साओ पाउलो में हुआ था। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फुटबॉल खिलाड़ियों में से नेमार को एक माना जाता है और साथ ही उन्हें इस सदी के सबसे महान ब्राजीलियाई फुटबॉलर होने का भी सम्मान मिला हुआ है। नेमार एक शानदार गोलस्कोरर है, जिनके पास दोनों पैरों के साथ-साथ अपने सिर और फ्री-किक और पेनल्टी से भी गोल करने में महारत हासिल है।

अपने पिता के मार्गदर्शन में नेमार ने साओ विसेंट में फुटबॉल खेलना शुरू किया। उनके पिता खुद पेशेवर फुटबॉलर रह चुके थे। साल 1999 में नेमार पोर्टुगुसा

सैंटिस्टा युवा क्लब में शामिल हुए और कुछ ही वर्षों में देश की फुटबॉल टीम में अच्छा नाम बना लिया। उन्होंने 2009 में सैंटोस एफसी में अपने पेशेवर क्लब करियर की शुरुआत की। क्लब के साथ अपने पहले सीजन में, उन्होंने 14 गोल किये।

नेमार को 2011 और 2012 में दो बार दक्षिण अमेरिकी फुटबॉलर ऑफ द ईयर नामित किया गया था। जल्द ही वह बार्सिलोना में शामिल होने के लिए यूरोप चले गए। बार्सिलोना के साथ चार सीजन के बाद, वह 2017 में पेरिस सेंट-जर्मेन में चले गए। हालांकि अब नेमार अल-हिलाल फुटबॉल क्लब का हिस्सा बन गए हैं।

अपनी निजी जिंदगी को शुरुआत से ही नेमार ने मीडिया से दूर रखा है और उनके निजी जीवन के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। नेमार और उनकी पूर्व प्रेमिका कैरोलिना डेंटास का एक बेटा है। जिसका नाम डेवी लुक्का है और उसका जन्म 13 अगस्त 2011 को हुआ था। फिलहाल नेमार ब्राजीलियाई अभिनेत्री और मॉडल ब्रूना बियानकार्डी को डेट कर रहे है। ब्रूना बियानकार्डी से पहले जेनी एंड्रेड, ब्रूना मार्केजीन, नतालिया बारुलिच भी नेमार की गर्लफ्रेंड रह चुकी हैं। नेमार के पास शानदार कार कलेक्शन भी है, जिसमें एक फरारी 458 स्पाइडर, एक पोर्श पनामेरा टर्बो और एक ऑडी आर8 जीटी शामिल हैं।

अपने पूरे फुटबॉल करियर में नेमार ने कई खिताब हासिल किए हैं। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से यूईएफए चैंपियंस लीग के शीर्ष गोलस्कोरर (2015), साउथ अमेरिका फुटबॉलर ऑफ द ईयर (2011, 2012), कन्फेडरेशन कप गोल्डन बॉल (2013), ब्राज़ीलियाई फुटबॉलर ऑफ द इयर (2011), फीफा वर्ल्ड प्लेयर ऑफ द ईयर (2013, 2014, 2016), बैलोन डी%ओर (2015, 2017) पुरस्कार जीते हैं। नेमार क्लब और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक शानदार गोलस्कोरर रहे हैं।

शुभमन गिल ने दिया विराट कोहली की चोट पर बड़ा अपडेट

नई दिल्ली एजेंसी। विराट कोहली इंग्लैंड के खिलाफ दूसरा वनडे खेलेंगे या नहीं ये इस समय का सबस बड़ा सवाल है। इंडिया वर्सेस इंग्लैंड तीन मैच की वनडे सीरीज का आगाज 6 फरवरी को नागपुर में खेले गए पहले मुकाबले से हुआ। इस मुकाबले की शुरुआत में फैंस का दिल उस समय टूटा जब उन्हें पता चला कि, चोटिल होने की वजह से किंग कोहली मैच नहीं खेल रहे हैं। कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस के दौरान बताया कि विराट कोहली के घुटने में दिक्कत है जिस वजह से वह मैच से बाहर हो गए हैं। उनकी जगह नागपुर वनडे में श्रेयस अय्यर को खेलने का मौका मिला।

इंडिया वर्सेस इंग्लैंड दूसरा वनडे 9 फरवरी को कटक में खेला जाना है। क्या इस मुकाबले से पहले विराट कोहली फिट हो पाएंगे। फैंस की जुबां पर यही सवाल है। इस सवाल का जवाब भारत के उपकप्तान शुभमन गिल ने

देकर फैंस का दिन बना दिया है। उनका कहना है कि वारट कोहली की चोट को लेकर चिंता करने वाली कोई बात नहीं है और कहा है कि स्टार बल्लेबाज कटक में दूसरे वनडे के लिए टीम में वापस आ जाएगा। गिल ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा कि, जब वह सुबह उठे तो उनके घुटने में सूजन थी। कल के अभ्यास सत्र तक वह ठीक थे। चिंता की कोई बात नहीं है। वह अगले मैच के लिए निश्चित रूप से फिट होंगे।

विराट कोहली की जगह नागपुर वनडे में शुभमन गिल नंबर-3 पर उतरे थे और इस खिलाड़ी ने 87 रनों की शानदार पारी खेल टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। गिल को इस पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच के अवॉर्ड से भी नवाजा गया। गिल ने नंबर-3 पर खेलने को लेकर कहा कि, मुझे लगता है कि मैं टेस्ट मैचों में तीसरे नंबर पर खेलता हूं इसलिए ये बहुत बड़ा बदलाव नहीं था। लेकिन, निश्चित रूप से, स्थिति थोड़ी अलग है। अगर आप तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी कर रहे हैं और शुरुआती विकेट गिर जाते हैं। आपको स्थिति के अनुसार खेलना होगा। हालांकि, अगर सलामी बल्लेबाजों ने अच्छी साझेदारी की है, तो आपको उस लय को आगे बढ़ाना होगा। यही मेरी सोच थी स्थिति और जिस ओवर में मुझे आना था, उसके अनुसार बल्लेबाजी करना।

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने वॉकथॉन रैली को दिखाई हरी झण्डी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने विश्व कैंसर दिवस के उपलक्ष्य में रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। नेशनल हास्पिटल रीवा के संयोजकत्व में आयोजित रैली कलेक्ट्रेट परिसर में आरंभ होकर शहर के विभिन्न मार्गो से गुजरती हुई अटल पार्क में समाप्त हुई। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि कैंसर की समय पर पहचान समुचित उपचार के लिये महत्वपूर्ण है। लोगों को कैंसर बीमारी के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य का कार्य करेगी। केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा कैंसर उपचार के लिये महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं। शासकीय अस्पतालों के साथ ही निजी चिकित्सालय में इस बीमारी के विरूद्ध लड़ाई में सहभागी बन रहे हैं। सभी के समन्वित प्रयासों व आमजनों में जागरूकता से ही कैंसर मुक्त देश का मार्ग प्रशस्त होगा। रैली में कौशल विकास एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम टेटवाल, विधायक मनगवां इंजी. नरेन्द्र प्रजापति, जिला भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र गुप्ता सहित जनप्रतिनिधिगण, शहर के गणमान्य नागरिक, चिकित्सक तथा बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

महिलाओं को सिलाई मशीन व प्रशिक्षण प्रमाण पत्र दिया

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड, मनकहरी ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहल के तहत सफलतापूर्वक तीन महीने का सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने पर सिजहटा और बगहाई की 33 महिलाओं को सिलाई मशीन और प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरित किए।उपरोक्त आशय की जानकारी देते हुये प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड के ए.जी.एम. जनसंपर्क देवेन्द्र मिश्रा ने कंपनी द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्वों द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यो का विवरण देते हुये बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आईएएस और जिला पंचायत सतना की सीईओ सुश्री संजना जैन थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम पंचायत सिजहटा के सरपंच अनिल सिंह ने की, जबकि ग्राम पंचायत बगहाई की सरपंच श्रीमती आशा मनोज साकेत विशिष्ट अतिथि रहीं। इस अवसर पर मनीष कुमार सिन्हा सीनियर वाइस प्रेसीडेंट-एचआरएम एंड कार्पोरेट अफेयर्स और राजेश कुमार जेजीएम-टैलेन्ट मैनेजमेंट एंड आईएमएस सहित प्रिज्म जॉनसन के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी के लिए पंजीयन जारी

किसानों से 2425 रुपए प्रति क्विंटल की दर से होगा गेंहू का उपार्जन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य देने के लिए शासन द्वारा समर्थन मूल्य पर खरीद की जाती है। शासन द्वारा वर्तमान वर्ष के लिए गेंहू का समर्थन मूल्य 2425 रूपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी के लिए किसानों का पंजीयन 20 जनवरी से शुरू हो गया है। पंजीयन 31 मार्च तक होगा। किसान एमपी किसान एप, ई-उपार्जन पोर्टल तथा ई-उपार्जन मोबाइल एप पर अपना पंजीयन करा सकते हैं। इस संबंध में जिला आपूर्ति नियंत्रक सीबीएस जादौन ने बताया कि रीवा जिले में गेंहू उपार्जन के लिए 58 खरीदी केन्द्र प्रस्तावित किए जा रहे हैं। किसान इन खरीदी केन्द्रों में गेंहू उपार्जन के लिए पंजीयन करा सकते हैं। सभी किसान निर्धारित खरीदी केन्द्रों में अपना आनलाइन पंजीयन अवश्य करायें। पंजीकृत किसानों से ही समर्थन मूल्य पर गेंहू की खरीद की जायेगी। स्वयं के मोबाइल, कम्प्यूटर, खरीदी केन्द्र तथा ग्राम पंचायत कार्यालय में स्थापित सुविधा केन्द्र में पंजीयन की निःशुल्क व्यवस्था की गई है। किसान 50 रुपए का शुल्क देकर एमपी ऑनलाइन कियोस्क, कॉमन सर्विस सेंटर, लोक सेवा केन्द्र तथा साइबर कैफे में पंजीयन करा सकते हैं। जिला आपूर्ति नियंत्रक ने बताया कि पंजीयन के समय किसान आधार संख्या से लिंक बैंक खाते दर्ज करें जिससे ऑनलाइन भुगतान किया जा सके। पंजीयन कराने के लिए किसान को बोये गये खेत के खसरा नंबर की ऋण पुस्तिका, आधार से लिंक बैंक खाते की जानकारी देकर अपना पंजीयन करा सकते हैं। बटाईदार एवं सिकमी किसानों के लिए भी ऑनलाइन पंजीयन की व्यवस्था की गयी है। केवल पंजीकृत किसानों को ही गेंहू उपार्जन का लाभ दिया जायेगा।

कलेक्टर ने रायपुर कर्चुलियान में विभिन्न कार्यालयों का किया निरीक्षण

कलेक्टर ने पठन-पाठन व्यवस्था ठीक न होने पर प्राचार्य को निलंबित करने के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने रायपुर कर्चुलियान तहसील मुख्यालय का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, हायर सेकण्डरी स्कूल, आजीविका मिशन कार्यालय तथा ग्राम सिरखिनी में उचित मूल्य दुकान का निरीक्षण किया। कलेक्टर ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के लिए स्वीकृत नवीन भवन का निर्माण कार्य तत्काल शुरू करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि जीर्ण-शीर्ण भवनों को ध्वस्त करके स्वीकृत स्थल पर कार्य तत्काल प्रारंभ कराएं। नए भवन का निर्माण इस तरह से करें कि पुराने भवन का भी समुचित उपयोग किया जा सके। कलेक्टर ने आजीविका मिशन कार्यालय का निरीक्षण करते हुए आजीविका मिशन की गतिविधियों की जानकारी ली। कलेक्टर ने स्वसहायता समूहों के बैंक लिंकेज एवं प्रशिक्षण के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए।

इसके बाद कलेक्टर ने शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रायपुर कर्चुलियान का निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय प्राचार्य सहित तीन शिक्षक अनुपस्थित पाए गए। कलेक्टर ने परिसर में संचालित विभिन्न कक्षाओं का निरीक्षण किया। कक्षा दसवीं में दर्ज 50 में से केवल 6 छात्राएं उपस्थित मिलीं। कलेक्टर ने छात्राओं से कहा कि बोर्ड परीक्षाएं शुरू होने वाली हैं। समय का पूरा उपयोग परीक्षाओं की तैयारी में करें। बिना किसी डर के पेपर हल करें। कलेक्टर ने छात्राओं से उनके कॅरियर तथा आगे की पढ़ाई के संबंध में चर्चा की। इसके बाद कलेक्टर ने माध्यमिक खण्ड का निरीक्षण किया। माध्यमिक खण्ड में एक ही कमरे में कक्षा 6, कक्षा 7 एवं कक्षा 8 की संयुक्त कक्षा संचालित की जा रही थी। कलेक्टर ने संयुक्त कक्षा संचालित होने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए प्राचार्य तथा शिक्षकों को अलग-अलग कक्षों में कक्षाएं संचालित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कक्षा 6 की छात्राओं से किताबें पढवाईं। उन्होंने अच्छे से किताब पढ़ने पर पीठ थपथपाकर शाबाशी दी। विद्यालय की साफ-सफाई व्यवस्था ठीक न होने, कक्षाओं का ठीक से संचालन न होने तथा शिक्षकों की अनुपस्थिति पर कलेक्टर ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की। कलेक्टर ने प्राचार्य संजय सक्सेना को निलंबित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने जिला शिक्षा अधिकारी को अनुपस्थित शिक्षकों रमेश कुमार मिश्रा, जयश्री सिंह, रजनीश कुमार उपाध्याय के विरूद्ध कार्यवाही के निर्देश दिए।

इसके बाद कलेक्टर ने ग्राम सिरखिनी में उचित मूल्य दुकान का निरीक्षण किया। दुकान में आवंटन के अनुसार खाद्यान्न उपलब्ध पाया गया। कलेक्टर ने दो राशन कार्डधारियों को प्राप्त खाद्यान्न की तौल कराई। खाद्यान्न सही मात्रा में पाए गए। राशन कार्डधारी ने बताया कि हर महीने 10 से 15 तारीख तक खाद्यान्न मिल जाता है। उचित मूल्य दुकान का संचालन जानकी स्वसहायता समूह द्वारा किया जा रहा है। कलेक्टर ने वितरित किए जाने वाले खाद्यान्न की गुणवत्ता का भी परीक्षण किया। खाद्यान्न ठीक गुणवत्ता का पाया गया। कलेक्टर ने भ्रमण के दौरान एसडीएम रायपुर कर्चुलियान पीएस त्रिपाठी, बीएमओ, जिला आपूर्ति अधिकारी सीबीएस जादौन, सहायक आपूर्ति अधिकारी सुभाष द्विवेदी, सहायक आपूर्ति अधिकारी गौरी मिश्रा तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां के सलाहकार समिति की बैठक

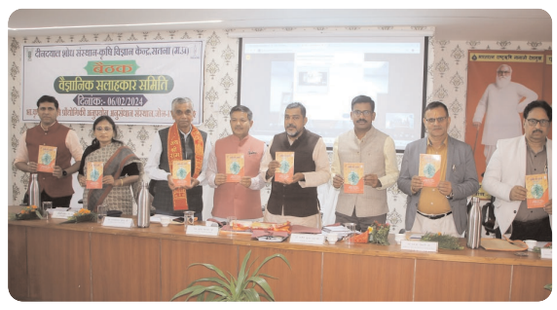

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां जिला सतना के सलाहकार समिति की बैठक गुरुवार को कलेक्टर श्री सतीश कुमार एस के मुख्यातिथ्य में कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां में आयोजित की गई। बैठक में महापौर श्री योगेश ताम्रकार,जिला पंचायत अध्यक्ष श्री रामखेलावन कोल, डीआरआई के संगठन सचिव श्री अभय महाजन,अपर कलेक्टर श्री स्वप्निल वानखड़े,सीईओ जिला पंचायत सुश्री संजना जैन, कृषि महाविद्यालय रीवा के अधिष्ठाता डॉ.एसके त्रिपाठी,चित्रकूट डॉ.डीपी राय सहित समिति के सदस्य,विभागीय अधिकारी तथा कृषक उपस्थित रहे।

स्व. अर्जुन सिंह चौहान के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि स्व. अर्जुन सिंह चौहान के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वह वरिष्ठतम नेता थे उन्होंने एक-एक ईट रखकर रीवा को विकास के पथ पर अग्रसर किया। उप मुख्यमंत्री रीवा में आयोजित स्व. अर्जुन सिंह चौहान की श्रद्धांजलि सभा में सम्बोधित कर रहे थे।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि स्व. चौहान बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में काम किया तथा अधिक उम्र में भी सक्रिय बने रहे। उनकी विकास पर्व व अन्य आयोजनों में सक्रिय भागीदारी रहती थी। वह हर खुशी के पल को जीभर कर जीते थे और नाचकर अपनी खुशी जाहिर करते थे। शुक्ल ने कहा कि स्व. चौहान ही पुराने समय के वह नेता थे जिनकी राज्य स्तर पर पहचान थी। उन्होंने रीवा सहित प्रदेश के विकास में अपना योगदान दिया। उनकी यादें शेष हैं जिन्हें संजोकर रखना होगा और उनके बताये रास्ते पर चलकर देश को उन्नतिशील राष्ट्र बनाने का संकल्प लेना होगा। इस दौरान विधायक मनगवां इंजी. नरेन्द्र प्रजापति, जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, जिला भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र गुप्ता सहित वरिष्ठजन उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्यों की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सर्किट हाउस में गुढ़ स्थित भैरव बाबा मंदिर के निर्माण कार्यों की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री ने भैरव बाबा मंदिर के सामने बनायी जा रही दुकानों के निर्माण कार्य की भी समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री ने गोविंदगढ़ में टाइगर ब्रीडिंग सेंटर के प्रस्तावित निर्माण के संबंध में जानकारी ली। इस अवसर पर संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

दो लाख रूपये से अधिक कीमत की अवैध मदिरा व महुआ लाहन जप्त

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देशन में जिले में अवैध मदिरा के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए हनुमान गढ़ी मे रावेन्द्र कोल के रिहायाशी माकान से 120 किलोग्राम महुआ लाहन,जलसा रावत के रिहायशी माकान से 500 किलोग्राम महुआ लाहन तथा 10 लीटर हाथ भट्टी मदिरा,कमल कोल के रिहायशी माकान से 300 किलोग्राम महुआ लाहन तथा 10 लीटर हाथ भट्टी मदिरा,साबित्री कोल के रिहायाशी माकान से 520 किलोग्राम महुआ लाहन तथा 09 लीटर हाथ भट्ट मदिरा,रामा रावत के रिहायाशी माकान से 380 किलोग्राम महुआ लाहन तथा 07 लीटर हाथ भट्टी मदिरा,कलाबती कोल के रिहायाशी माकान से 140 किलोग्राम महुआ लाहन,रामदुलारे कोल के रिहायशी माकान से 100 किलोग्राम महुआ लाहन,रानू कोल के रिहायाशी माकान से 60 किलोग्राम महुआ लाहन तथा 07 लीटर हाथ भट्टी मदिरा,ग्राम-सेमरिया मे राहुल सिंह के रिहायाशी माकान से 38 पाव गोवा व्हिस्की बरामद की गई।

जिला आबकारी अधिकारी अनिल जैन से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस प्रकार 9 प्रकरणों मे 2120 किलोग्राम महुआ लाहन तथा 43 लीटर हाथ भट्टी मदिरा,38 पाव गोवा व्हिस्की जप्त कर प्रकरण कायम किये गए। जप्त मदिरा व महुआ लाहन की कीमत 2 लाख 23 हजार 580 रूपये हैं। कार्यवाही में उड़न दस्ता प्रभारी अखिलेश्वर सिंह ठाकुर, आबकारी उपनिरीक्षक आशीष शुक्ला, मुख्य आरक्षक रमागोविन्द गहरवार, आरक्षक, महेंद्र सिंह, संगीता द्विवेदी, वेदप्रकाश तिवारी, अखिलेश शुक्ला,शुभम द्विवेदी, राजेंद्र मिश्रा,मनोज द्विवेदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जनसभा को करेंगे संबोधित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, राज्यसभा सांसद, कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय नेता दिग्विजय सिंह 9 फरवरी को प्रतिमा अनावरण स्थल के बाद, सिरमौर विधानसभा के ग्राम पंचायत सितलहा मां शीतला धाम में गांधी प्रतिमा में माल्यार्पण कर मैदान परिसर में जन सामान्य को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमेटी रीवा के अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा करेंगे। कार्यक्रम में कई वरिष्ठ नेता गण भी रहेंगे। कार्यक्रम के आयोजक अमित चक्रधर सिंह सरपंच ग्राम पंचायत सितलहा एवं अध्यक्ष सरपंच संघ जवा ने सभी पंचायत के प्रतिनिधि गण, देवतुल्य जनता जनार्दन , एवं कांग्रेस पार्टी के सभी पदाधिकारी गणों से ग्राम पंचायत सितलहा मैदान में पहुंचने की विनम्र अपील की है।

जुर्माने जमा न करने वाले 11 दुकानदाने होंगी निलंबित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देशों के अनुसार खाद्य सुरक्षा विभाग के दल ने जिले भर में विभिन्न प्रतिष्ठानों के खाद्य नमूनों की जाँच कराई। विभिन्न प्रतिष्ठानों के विरूद्ध प्रकरण अपर जिला दण्डाधिकारी न्यायालय में प्रस्तुत किए गए। जिनमें प्रकरणों की सुनवाई के बाद अपर जिला दण्डाधिकारी द्वारा जुर्माने की राशि अधिरोपित की गई है। जुर्माने की राशि जमा न करने पर 11 दुकानों के लाइसेंस निलंबित करने एवं प्रतिष्ठान को बंद कराने की कार्यवाही की जा रही है। इस संबंध में उप संचालक खाद्य एवं औषधि प्रशासन तथा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला ने बताया कि एक लाख रुपए जुर्माने की राशि जमा न करने पर होटल चन्द्रलोक रेजिडेंसी चोरहटा मालिक सतनाम सिंह, पसंद बेकरी घोघर संचालक राकेश लखवानी, बसंत डेयरी यूनिवर्सिटी रोड रीवा संचालक बसंतलाल यादव को लाइसेंस के निलंबन का नोटिस दिया गया है।

कविता मेडिकल एजेंसी रमागोविंद पैलेस संचालक रमेश कुमार त्रिपाठी जुर्माना एक लाख 50 हजार रुपए, राल्ही ढाबा गढ़ संचालक विजय कुमार मिश्रा जुर्माना 50 हजार रुपए, मुख्यमंत्री दीनदयाल रसोई केन्द्र अस्पताल चौराहा संचालक कौशलेश मिश्रा जुर्माना 50 हजार रुपए, आन्या एक्का एसोसिएट जेपी मोड़ संचालक पुष्पराज सिंह जुर्माना 50 हजार रुपए को भी नोटिस दिया गया है। इसी तरह मुक्ति सिकदार राय नया बस स्टैण्ड जुर्माना 13 हजार रुपए, किराना स्टोर रायपुर कर्चुलियान मालिक देवमणि साहू जुर्माना 35 हजार रुपए, दुर्गेश गुप्ता वार्ड नम्बर 11 गुढ़ जुर्माना 25 हजार रुपए तथा कृष्णा डेयरी एसएफ चौराहा संचालक ओमप्रकाश यादव को भी दुकान का लाइसेंस निलंबित करने और दुकान बंद कराने का नोटिस दिया गया है। तीन दिन की समय सीमा में जुर्माने की राशि जमा न करने पर लाइसेंस निलंबित करने और दुकान बंद कराने की कार्यवाही की जाएगी।

उच्च स्तरीय टीम ने किया एमपी ट्रांसको का दौरा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। तमिलनाडु पावर ट्रांसमिशन कंपनी की प्रबंध संचालक के. इंद्राणी के नेतृत्व में तमिलनाडु ट्रांसमिशन कंपनी की उच्च स्तरीय अधिकारियों की टीम ने मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी के मुख्यालय जबलपुर का दौरा कर एक आपसी समन्वय बैठक में हिस्सा लिया। इस उच्च स्तरीय बैठक में तमिलनाडु ट्रांसमिशन कंपनी की प्रबंध संचालक के. इंद्राणी तथा एमपी ट्रांसको के प्रबंध संचालक इंजीनियर सुनील तिवारी सहित मुख्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने हिस्सा लिया, जिसमें दोनों कंपनियों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने संस्थानों में अपनाई जा रही बेस्ट प्रैक्टिसों के बारे में चर्चा की और आपसी तालमेल के साथ एक-दूसरे की बेस्ट प्रेक्टिस पर अमल करने के लिए सैद्धांतिक सहमति व्यक्त की।

तमिलनाडु ट्रांसको की प्रबंध संचालक इंद्राणी ने स्काडा कंट्रोल सेंटर का दौरा कर उसकी कार्य प्रणाली का सूक्ष्मता से अध्ययन किया। उन्होंने कहा कि एमपी ट्रांसको का यह बेहतरीन स्काडा सेंटर नेटवर्क स्टडी और सिस्टम मॉनिटरिंग के लिए सटीक टूल है। स्काडा कंट्रोल सेंटर जबलपुर में उपलब्ध सुविधाओं को उत्कृष्ट बताते हुए तमिलनाडु ट्रांसमिशन कंपनी के ग्रिड ऑपरेशन के मुख्य अभियंता विजय ने मध्यप्रदेश की तीनों डिस्काम कंपनियों की डिमांड एक स्थान पर मॉनिटर करने की व्यवस्था को अद्भुत बताते हुए कहा कि 33 केव्ही लेवल की स्काडा से मानिटरिंग करना एक बेहद सराहनीय उपलब्धि है। टीम ने मध्यप्रदेश द्वारा अपनाई गई टीबीसीबी (टेरिफ बेस्ड कॉम्पटीटिव बिडिंग) और एसटीयू (स्टेट ट्रांसमिशन यूटिलिटी) की कार्य प्रणाली को भी समझा।

पॉक्सो एक्ट पर हुई कार्यशाला

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम 2012 (पॉक्सो एक्ट) विषय में एक दिवसीय कार्यशाला का का आयोजन कृषि महाविद्यालय में किया गया। कलेक्टर प्रतिभा पालन के निर्देशन आयोजित कार्यशाला में महाविद्यालय के डीन एसके त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि बाल यौन अपराध संरक्षण अधिनियम संबंधी कानून के तहत किसी भी बच्चे के प्रति यौन दुर्व्यवहार, यौन हमला या यौन शोषण को अपराध माना जाता है। इस कानून के तहत दोषी पाए जाने पर सख्त सजा का प्रावधान है। इस कानून के तहत बच्चों के सर्वोत्तम हितों और कल्याण को भी ध्यान में रखा जाता है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।